बाईबल रीडिंग प्लॉनर

परिचय

बाईबल के विषय में

■ बाईबल हम सब के लिए परमेश्वर का सन्देश है। यह उसका वचन है। यह अद्वैत है।

■ विश्व का सबसे अधिक आश्चर्यजनक साहित्य होने के साथ ही यह एक मात्र पुस्तक है जिसमें हम पढ़ सकते है कि अतीत में परमेश्वर ने मानवजाति के साथ किस तरह कार्य किया, वर्तमान समय के लिए उसका सन्देश और भविष्य से सम्बन्धित उसकी प्रतिज्ञायें।

■ यह केवल एक मात्र पुस्तक है जो हमें, परमेश्वर के विषय में और उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह के विषय में बताने के लिए, स्वंय परमेश्वर के द्वारा हमें दी गयी है।

■ केवल बाईबल में हम इस विषय में पढ़ सकते है कि हम क्यों मरते है और हम किस प्रकार अमर हो सकते है।

■ बाईबल का सन्देश इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि हमें इसे नजरअन्दाज नही करना चाहिये और ना ही दूसरों पर छोड़ना चाहिये कि वे हमें इसके विषय में बतायें।

■ इसलिए हमें यह स्वंय पढ़नी चाहिये।

आज ही बाईबल पढ़ें

■ इस संसार और आपके लिए समय बहुत ही तेजी से गुजर रहा है।

■ आज इस अवसर को हाथ से न जानें दें और अब ही इस अद्‌भुत पुस्तक को पढ़ना शुरू करें।

■ आज ही इस बात की खोज शुरू करें कि हम किस प्रकार यीशु मसीह के पुनः आगमन के लिए तैयार रह सकते है।

कौन सा संस्करण पढ़ें?

■ बाईबल के बहुत सी भाषाओं में बहुत से संस्करण है।यहां तक कि अंग्रेजी में भी 17वीं शताब्दी से लेकर आधुनिक भाषा में, आज जैसे हम बोलते और लिखते है, अनुवाद उपलब्ध है।

■ आप जो भी संस्करण प्रयोग करेंगे उसमें आपको एक ही मुख्य आधारभूत सन्देश मिलेगा।कुछ लोग ऑथराईज्ड या किंग जैम्स संस्करण की काव्यात्मक भाषा को प्राथमिकता देते है। अन्य लोग आधुनिक पद्धति, जैसे रिवाईज्ड ऑथराईज्ड या न्यू इण्टरनेशनल संस्करण को प्रयोग करते है। यह एक व्यक्तिगत चुनाव है। जो संस्करण आपके लिए सबसे अधिक उपयुक्त है, आप प्रयोग कर सकते है।

■ यदि आप नयी बाईबल खरीदते है तो सन्दर्भ पदों वाली बाईबल खरीदना आपके लिए अधिक लाभकारी होगा।

मुख्य पृष्ठ फोटो: क्यूमरॉन की गुफाऐं, मृत सागर–इस्राएल सरकार पर्यटन विभाग की अनुमति से।

लगभग 200 ईसापूर्व से 70 ईसवी तक यह क्षेत्र यहूदियों के एक समर्पित समाज के अधिकार में था, जिन्हें ''इसेन्स'' कहते थे। ये लोग परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी थे और उन्होंने अपने लेख पत्थरों के मरतबानों में सुरक्षित किये थे।जब रोमियों के द्वारा उनको सताया गया तो उन्होंने अपने लेखों को इन गुफाओं में छिपा दिया था। 1947 में ये लेख खोजे गये।

इस बाईबल प्लॉनर को कैसे प्रयोग करें

- इस प्लॉनर के अनुसार बाईबल पढ़ने से आप प्रत्येक दिन बाईबल का एक अध्याय पढेंगे। यह एक बहुत ही अद्‌भुत आदत है जो हमें बनानी चाहिए।
- इसके अनुसार बाईबल पढ़ने से आप ठीक 52 सप्ताहों में 6 चरणों को पूरा करेंगे। इसलिए यह सम्भव है कि एक वर्ष में आप बाईबल के सम्पूर्ण संदेश को अच्छी तरह से समझ जायेंगे।
- इसमें प्रत्येक चरण प्रारम्भ होने से पहले उसका परिचय दिया गया है जिसमें उस चरण में निहित अध्यायों और संदेश का अवलोकन है। आप से निवेदन है कि इसको क्रमानुसार पढ़ें। मुख्य पृष्ठ के पीछे एक सूचि दी गयी है जहां से आप अपनी रूचि के अनुसार सन्देशों को या अध्यायों को देखकर पढ़ सकते है।
- प्रत्येक दिन के अध्याय को उसके सन्देश के साथ ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिये। उससे सम्बन्धित दूसरे बाईबल के पदों को भी दिया गया है जिनको पढ़ना और अधिक लाभकारी होगा। ऐसा करने से पता चलता है कि बाईबल का सन्देश किस प्रकार तर्कसंगत है। परमेश्वर के वचन का प्रत्येक हिस्सा हमें कुछ बताता है।
- गिनती 14:21 का अर्थ है कि गिनती की पुस्तक का 14वां अध्याय और उसका 21वां पद। बाईबल के शुरू में ही 66 पुस्तकों की सूचि दी जाती है ताकि आप बाईबल की पुस्तकों को आसानी से खोलकर पढ़ सकें।
- पिछले पृष्ठ के अन्दर एक चार्ट दिया गया है जो दिखाता है कि बाईबल के लोग, घटनाऐं और पुस्तकें, इतिहास में किस प्रकार से फिट है।
- पृष्ठ संख्या 60 से 63 तक बाईबल की महत्वपूर्ण शिक्षाओं का सारांश दिया गया है।
- हालांकि यह प्लॉनर एक वर्ष में समाप्त हो जाता है लेकिन क्योंकि इस पर तारीख नही दी गयी है तो इसलिए आप को अगली 1 जनवरी तक प्रतिक्षा करने की आवश्यकता नही है। आप इसको पहले चरण से कभी भी पढ़ना आरम्भ कर सकते है।
- इसलिए आप आज ही इसके अनुसार बाईबल को पढ़ना शुरू करें।

■ अपना प्रतिदिन का बाईबल पाठ प्रार्थना के साथ शुरू करें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको आशीष दें।

■ पहले चरण का बाईबल पाठ, बाईबल के विभिन्न भागों से लिया गया है और बहुत ही रूचिकर है।

■ बाईबल की 66 पुस्तकों को जैसे–जैसे आप पढ़ते जायेंगे तो इसकी एकात्मकता, सच्चाई और दिव्य उत्पत्ति निश्चित होती जायेगी। यद्यपि यह विभिन्न लेखकों के द्वारा 1500 वर्षो के समय में लिखी गयी, लेकिन परमेश्वर इसका लेखक है और उसका संदेश सम्पूर्ण बाईबल में एक समान है।

■ निरन्तर, ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक पढ़ें।

रविवार	**भजनसंहिता 19**
सोमवार	**उत्पत्ति 1**
मंगलवार	**लूका 2**
बुद्धवार	**1 कुरिन्थियों 13**
बृहस्पतिवार	**मरकुस 4**
शुक्रवार	**सभोपदेशक 3**
शनिवार	**2 तिमुथियुस 3**

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – भजनसंहिता 19 – सृष्टि परमेश्वर की सामर्थ और उसकी महिमा के विषय में बताती है (पद 1–6) लेकिन केवल बाईबल परमेश्वर की योजना और उसके मार्गो के विषय में बताती है। (पद 7–14)

सोमवार – उत्पत्ति 1 – हर चीज को परमेश्वर ने बनाया है। उसने प्रकृति के नियमों को बनाया है और पृथ्वी को मनुष्यों के रहने के लिए तैयार किया है।

मंगलवार – लूका 2 – यीशु के चमत्कारी जन्म से शान्ति (पद 14) और यहूदियों ओर अन्यजातियों के उद्धार (पद 29–32) की प्रतिज्ञा आयी।

बुद्धवार – 1कुरिन्थियों 13 – प्रेम एक सर्वोच्च गुण है जिसका हमें अनुसरण करना है और इसके द्वारा ही अनन्त भविष्य की प्रतिज्ञा है। (पद 11–13)

बृहस्पतिवार – मरकुस 4 – परमेश्वर का वचन एक बहुमूल्य बीज है जिसको हमें बोना है और जो परमेश्वर की महिमा के लिए हमारे जीवनों में फल लाता है।

शुक्रवार – सभोपदेशक 3 – जीवन छोटा और नाजुक है। हमें अपने समय को परमेश्वर की सेवा के लिए बुद्धिमानी से और अपने आप को न्याय के दिन के लिए तैयार करने के लिए प्रयोग करने की आवश्यकता है। (पद 17)

शनिवार – 2तिमुथियुस 3 – आज के संसार को पद 1 से 7 में वर्णित किया गया है। परमेश्वर ने, हमें धार्मिक बनाने के लिए और हमें उद्धार तक ले जाने के लिए, बाईबल दी है। (पद 15–17)

चरण 2 परिचय

दूसरे चरण में दो सप्ताह है–एक सप्ताह में पुराना नियम और दूसरे सप्ताह में नया नियम।

■ दूसरे सप्ताह में उत्पत्ति की पुस्तक के पहले कुछ अध्यायों की सृष्टि की घटनाऐं है।

■ तीसरे सप्ताह में नयी शुरूआत है जब यीशु अच्छे काम और उद्धार के सुसमाचार का प्रचार शुरू करते है।

परमेश्वर की योजना

■ अपने मस्तिष्क में एक विशेष उद्देश्य के साथ परमेश्वर ने पृथ्वी, पहले आदमी और पहली स्त्री की सृष्टि की थी।

■ यह उद्देश्य यह है कि यह पृथ्वी उन लोगों से भर जायेगी जो परमेश्वर की सेवा करें और उसकी महिमा करें। (गिनती 14:21)

■ इन विश्वासी लोगों को परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन प्रदान किया जायेगा। (यशा.45:18,23; मत्ती 5:5, दानि.7:27)

■ परमेश्वर के बेटे–यीशु मसीह, का चमत्कारी जन्म इस योजना का एक अहम हिस्सा था। परमेश्वर की इच्छा के प्रति उनकी सम्पूर्ण आज्ञाकारिता इस योजना के लिए महत्वपूर्ण थी।

■ बाईबल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें बताती है कि हमें क्या करना है।

उत्पत्ति

रविवार	उत्पत्ति 2
सोमवार	उत्पत्ति 3
मंगलवार	उत्पत्ति 4
बुद्धवार	उत्पत्ति 5
बृहस्पतिवार	उत्पत्ति 6
शुक्रवार	उत्पत्ति 7
शनिवार	उत्पत्ति 8

■ 'उत्पत्ति' का अर्थ है आरम्भ होने की पुस्तक। यह हमें पृथ्वी और आदमी और औरत के आरम्भ के विषय में बताती है।

■ यह हमें इस बारे में भी बताती है कि कैसे पाप और मृत्यु इस संसार में आयी।

■ इसमें सबसे पहले इस बात के संदर्भ है कि किस प्रकार परमेश्वर ने पापी मानवजाती को पाप से निकालने का प्रबन्ध किया। वास्तव में, उत्पत्ति की पुस्तक, बाईबल को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – उत्पत्ति 2 – आदमी (पद 7) और औरत (पद 22) की विशेष सृष्टि पर और सच्ची शादी के सम्बन्ध पर ध्यान दें। (पद 24)

सोमवार – उत्पत्ति 3 – परमेश्वर ने कहा कि पाप (आज्ञा न मानना) के कारण मृत्यु (पद 3) आयेगी और ऐसा ही हुआ। (पद 19)

मंगलवार – उत्पत्ति 4 – मनुष्य अब मर रहा है और उसे उद्धार की आवश्यकता है। वह परमेश्वर में विश्वास से उसकी सेवा कर सकता है और अनन्त जीवन की आशा रख सकता है (पद 4 और इब्रानियों 11:4) या कैन के समान, जिसने अपने भाई की हत्या की, (पद 5–8) पाप के वश में रह सकता है।

बुद्धवार – उत्पत्ति 5 – कैन के वंशज (अध्याय 4 से) शेत (पद 3 से आगे) की वशांवली, जिसमें नूह (पद 29) पैदा हुआ, के विपरीत थे।

बृहस्पतिवार – उत्पत्ति 6 – केवल नूह और उसका परिवार ही अपने आसपास के हिंसक समाज से अलग थे। परमेश्वर ने उनको बताया कि बचने (पद 14) के लिए उनको क्या करना है और साथ ही यह भी कि उन्हें यह कैसे करना है।(पद 15–16) बाईबल हमें बताती है कि हमें क्या करना चाहिए और यीशु का जीवन हमें दिखाता है कि हम किस प्रकार परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते है।

शुक्रवार – उत्पत्ति 7 – परमेश्वर ने जो कुछ नूह से कहा उसने विश्वास किया और उसने एक जहाज बनाया। हमें परमेश्वर की बातों (इब्रानियों 11:7) पर विश्वास करने की आवश्यकता है और न्याय के दिन के लिए तैयार रहना चाहिये। (2पतरस 3:1–17, 11–13)

शनिवार – उत्पत्ति 8 – परमेश्वर ने नूह को याद रखा (पद 1) और कबूतरी जलपाई के नये पत्ते के साथ शान्ति का एक प्रतीक (पद 11) बन गयी। परमेश्वर कभी भी पृथ्वी को नाश नही करेगा।(पद 22 और उत्पत्ति 9:13–15)

चरण 2 सप्ताह 3

रविवार	मत्ती 1
सोमवार	मत्ती 2
मंगलवार	मत्ती 3
बुद्धवार	मत्ती 4
बृहस्पतिवार	मत्ती 5
शुक्रवार	मत्ती 6
शनिवार	मत्ती 7

मत्ती

■ नया नियम 'यीशु मसीह की वंशावली' के साथ शुरू होकर यीशु के, पुराने नियम में अब्राहम (उत्पत्ति 12) और राजा दाऊद (2 शेमूएल 7) के साथ, सम्बन्ध को दिखाता है।

■ मत्ती (एक चुंगी लेने वाला जो चेला हो गया था) को परमेश्वर ने इसलिए चुना कि वह यह लिखें और प्रगट करें कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है जिसके विषय में पुराने नियम में पहले से बताया गया है।

■ बार बार आने वाले उन पदों पर ध्यान दीजिये जो पुराने नियम के विषय में लिखे गये है जैसेः ''क्योंकि यह लिखा है...''

अब्राहम
दाऊद

सुलैमान — युसुफ (बाद में मरियम से शादी की) (मत्ती 1:16)

नातान — मरियम (यीशु की माता) (लूका 3)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – मत्ती 1 – यीशु परमेश्वर के पुत्र (पद 18–20) है। अपनी माता के द्वारा यीशु दाऊद (1000 ई.पू.) और अब्राहम (2000 ई.पू.) के वंशज भी है जैसा कि पुराने नियम में प्रतिज्ञा की गयी थी।

सोमवार – मत्ती 2 – दाऊद के पुत्र की किस्मत में राजा होना था, और जैसा भविष्यद्वक्ता मीका (700 ई.पू.) ने पहले ही से कह दिया था कि दाऊद के समान ही उसको बेतलहम में पैदा होना था। (मीका 5:2 और लूका 1:32)

मंगलवार – मत्ती 3 – यशायाह (700 ई.पू.) (यशायाह 40:1–5) के द्वारा परमेश्वर ने, एक अग्रदूत (यूहन्ना बपतिस्मादाता) के साथ एक उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतिज्ञा की। यीशु ने कोई पाप नही किया था कि उसको मनफिराना पड़ें लेकिन तो भी उन्होंने नम्रतापूर्वक आज्ञाकारिता को प्रगट करते हुए यूहन्ना के द्वारा बपतिस्मा लिया। (पद 15–17)

बुद्धवार – मत्ती 4 – यीशु ने समस्याओं और परीक्षाओं में, मार्गदर्शन के लिए, पुराने नियम को प्रयोग किया। (पद 4,7,10)

बृहस्पतिवार – मत्ती 5 – यीशु द्वारा पर्वत पर दिया गया संदेश (अध्याय 5–7) आज अव्यवहारिक समझा जाता है, लेकिन ये मसीह जीवन के लिए यीशु के नियम है जो प्रत्येक मसीह अनुयायी को अवश्य पालन करने चाहिये।

शुक्रवार – मत्ती 6 – यीशु की प्रार्थना एक नमूना है जिसके आधार पर हमें प्रार्थना करनी चाहिये। हमें प्रार्थना करनी चाहिये कि परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर आये और इसलिए भी कि यीशु आये और आकर इस संसार को ठीक करें।(पद 10)

शनिवार – मत्ती 7 – हमें सुरक्षित (पद 24–27) रहने के लिए मसीह और परमेश्वर के वचन में एक मजबूत नींव बनाने की आवश्यकता है। उद्धार प्रत्येक के लिए नही है बल्कि केवल उनके लिए जो इसकी इच्छा रखते है। (पद 13,19,21)

परिचय 3 चरण

तीसरे चरण में तीन रूचिकर सप्ताह है जो सबसे पहले हमें उत्पत्ति के 'कुलपतियों', अब्राहम, इसहाक और याकूब का परिचय देते है।

■ यह बुनियाद हमें शेष बाईबल को समझने में सहायता करेगी। उदाहरण के लिए यदि हम देखें तो नये नियम में हम सीखते है कि 'अब्राहम को सुसमाचार प्रचार किया गया' (गलातियों 3:8)

■ इसके साथ साथ ही हम दूसरी तरफ मत्ती द्वारा लिखे गये लेख में यीशु के जीवन और उनके कार्यो को पढ़ना जारी रखेंगे।

■ याद रखें जब आप पढ़ें तो लगातार, ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक पढ़ें। कृपया अपना कोई भी प्रश्न या टिप्पणी हमारे अन्तिम पृष्ठ पर दिये गये पते पर भेजें।

अब्राहम के समय के लोग और जगह
(उत्पत्ति 11 अध्याय देखें)

रविवार	उत्पत्ति 11
सोमवार	उत्पत्ति 12
मंगलवार	उत्पत्ति 13
बुद्धवार	उत्पत्ति 14
बृहस्पतिवार	उत्पत्ति 15
शुक्रवार	उत्पत्ति 17
शनिवार	उत्पत्ति 19

परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया

■ अब्राम (जिसे बाद में अब्राहम कहा गया) को परमेश्वर ने बेबीलोन को छोड़ने की आज्ञा दी। (उत्पत्ति 11–12) परमेश्वर ने उसको बड़ी आशीष देने की और भूमि देने की प्रतिज्ञा की। यह भूमि कनान थी, जिसको बाद में पलिस्तीन कहा गया।

■ अब्राम की आज्ञाकारिता और विश्वास असाधारण था। वह उन सब के लिए, जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते थे, एक उदाहरण बन गये।क्योंकि अब्राम ने परमेश्वर पर विश्वास किया तो परमेश्वर ने उसको धार्मिक गिना। (रोमियों 4:12–13 और 19–25)

■ अब्राम का विश्वास बाद में उसके कामों के द्वारा भी प्रगट हुआ। वह अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहा। जबकि परमेश्वर ने इस सब से पहले ही प्रतिज्ञा कर दी थी।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – उत्पत्ति 11 – ध्यान दें कि किस प्रकार परमेश्वर ने शेम के परिवार को चुना, नूह का एक पुत्र से अब्राम तक। (पद 10–26)

सोमवार – उत्पत्ति 12 – पद 2 और 3 में परमेश्वर के द्वारा की गयी महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा के 7 भाग है। अब्राम से की गयी, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का पूरा होना सभी देशों को प्रभावित करता है।

मंगलवार – उत्पत्ति 13 – कनान की भूमि सदा सर्वदा के लिए दिये जाने की प्रतिज्ञाऐं। (पद 14–17)

बुद्धवार – उत्पत्ति 14 – मेल्कीसेदेक (पद 18–20) एक राजा और याजक था। यीशु अब एक सच्चे विश्वासी के लिए याजक है और एक राजा के रूप में येरूशलेम में वापिस आयेंगे।

बृहस्पतिवार – उत्पत्ति 15 – अब्राम धर्मी गिना गया क्योंकि उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं (पद 6) पर विश्वास किया। परमेश्वर ने पहले ही बता दिया कि अब्राम का वंश कुछ समय के लिए बन्धुआई में जायेगा। (पद 13–14) परिणामस्वरूप इब्री, मिस्र में बन्धुआई में गये।

शुक्रवार – उत्पत्ति 17 – परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को दोहराया गया (पद 1–8) और अब्राम का नाम बदलकर अब्राहम (जातियों के समूह का मूलपिता) किया गया। ये प्रतिज्ञायें इसहाक के द्वारा पूरी होनी थी, ना कि इश्माएल के द्वारा। (पद 19)

शनिवार – उत्पत्ति 19 – परमेश्वर संसार की नैतिक दशा के विषय में चिन्तित था, क्योंकि वह लूत का समय था। (देखें लूका 17:28–32) सदोम का अधर्म बहुत बढ़ गया जो परमेश्वर को स्वीकार नही था।(उत्पत्ति 18:20)

रविवार	मत्ती 8
सोमवार	मत्ती 9
मंगलवार	मत्ती 10
बुद्धवार	मत्ती 11
बृहस्पतिवार	मत्ती 12
शुक्रवार	मत्ती 13
शनिवार	मत्ती 14

परमेश्वर का राज्य

■ मत्ती बताता है कि आने वाले परमेश्वर के राज्य में यीशु मसीह राजा होंगे, जैसी कि पुराने नियम में प्रतिज्ञा की गयी।

■ इस राज्य का वर्णन 'स्वर्ग के राज्य' (क्योंकि यह परमेश्वर से सम्बन्धित है) के रूप में किया गया है, लेकिन यह राज्य पृथ्वी पर स्थापित होगा और येरूशलेम इसकी राजधानी होगी।

■ 'मसीह की बुलाहट' बहुत तरह से है ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अब्राम को बुलाया। इसके लिए आपको उन प्रतिज्ञाओं में विश्वास करना आवश्यक है जो मसीह में निश्चित हुयी है और एक स्वेच्छा का शिष्य जीवन अवश्यक है।

राज्य के दृष्टान्त

■ यीशु ने बहुत बार दृष्टान्तों में सीखाया। दृष्टान्तों की योजना ऐसी थी कि नम्र लोगों को परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार को समझने और घमण्ड और विरोध को त्यागने में सहायता मिलें। दृष्टान्त उन लोगों को बहुत कुछ सीखा सकते है, 'जिनके सुनने के कान हो' और वे अद्‌भुत रीति से याद भी रहते है।

■ कुछ दृष्टान्त जैसे, बीज बोने वाला (मत्ती 13), राज्य की तैयारी के विषय में बताते है। और कुछ दूसरे दृष्टान्त जैसे भेड़ और बकरी (मत्ती 25)का दृष्टान्त, हमें भविष्य के विषय में बताते है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – मत्ती 8 – यीशु मसीह के द्वारा किये गये चमत्कारों ने, उनकी शिक्षाओं और जरूरतमन्दों की सहायता करने की उनकी योग्यता की सच्चाई को, प्रमाणित किया।

सोमवार – मत्ती 9 – पद 6–9, पापों की क्षमा यीशु के द्वारा ही सम्भव है। मत्ती को उसके पीछे चलने के लिए बुलाया गया। यदि हम यीशु के अनुयायी बनना चाहते है तो हमें यीशु के विषय में सीखने की आवश्यकता है।

मंगलवार – मत्ती 10 – पद 2–4, बारह चेलों ने यीशु के पीछे चलने के लिए सबकुछ छोड़ दिया। हमें उनके जैसे विश्वास की आवश्यकता है कि हम परमेश्वर को अपने जीवन में प्राथमिकता दें।(पद 38–39)

बुद्धवार – मत्ती 11 – पद 2–3, यूहन्ना की जिज्ञासा का उत्तर यीशु ने यशायाह के 35 अध्याय से दिया (जो भविष्य के राज्य के विषय में है)

बृहस्पतिवार – मत्ती 12 – पद 15–21, यीशु के व्यवहार ने यशायाह 42 अध्याय के 1–4 पदों की बातों को पूरा किया। परमेश्वर के सेवक को लोगों को आमंत्रित करना था ना कि उनको बलपूर्वक लाना था।

शुक्रवार – मत्ती 13 – इस अध्याय में राज्य से सम्बन्धित सात दृष्टान्त है। पद 23 में दी गयी महत्वपूर्ण स्थितियों पर ध्यान दीजियेः परमेश्वर के वचन को अ) ग्रहण करना... ब) सुनना... स) समझना...

शनिवार – मत्ती 14 – यीशु ने हमेशा दूसरों के बारे में सोचा – बिमारों के विषय में (पद 14), भूखों के विषय में (पद 19), पतरस के विश्वास के विषय में (पद 29), पतरस के डर के विषय में (पद 31)

चरण 3 सप्ताह 6

रविवार	उत्पत्ति 22
सोमवार	उत्पत्ति 26
मंगलवार	उत्पत्ति 27
बुद्धवार	उत्पत्ति 28
बृहस्पतिवार	उत्पत्ति 29
शुक्रवार	उत्पत्ति 30
शनिवार	उत्पत्ति 31

अब्राहम का परिवार

■ परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार से एक निश्चित लाईन को चुना जिसको मसीह तक जाना था।

■ उसने अब्राहम से की गयी प्रतिज्ञाओं को इनके साथ दोहराया, ये प्रतिज्ञायें एक विशेष वंश अर्थात यीशु मसीह, के द्वारा पूरी होनी थी।

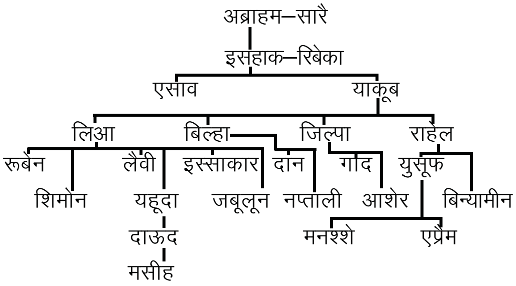

याकूब के बच्चों को 'इस्राएल की सन्तान' कहा गया। (12 गोत्र)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – उत्पत्ति 22 – परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को परखा।(पद 1) यह अध्याय उस समय की ओर संकेत करता है जब परमेश्वर को अपना पुत्र देना था! देखें कि यह नये नियम में किस प्रकार प्रयोग हुआ है (गलातियों 3:8–9,16)

सोमवार – उत्पत्ति 26 – परमेश्वर की इसहाक के लिए प्रतिज्ञा (पद 1–4), अब्राहम की आज्ञाकारिता (पद 5) से सम्बन्धित थी और इस संसार के सारे राज्यों के विषय में थी।

मंगलवार – उत्पत्ति 27 – रिबेका जानती थी कि याकूब को आशीषित होना था (उत्पत्ति 25:19–34)फिर भी उसको परमेश्वर के ऐसा करने तक प्रतिक्षा करनी चाहिए थी।

बुद्धवार – उत्पत्ति 28 – परमेश्वर ने याकूब से (अब इसहाक से नही) प्रतिज्ञा की, जैसे उसने पहले अब्राहम से की थी। (पद 13–15) वह अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर है।(पद 13)

बृहस्पतिवार – उत्पत्ति 29 – याकूब को धैर्य और परमेश्वर पर भरोसा करना सीखना पड़ा।वह 20 वर्षो तक लाबान के घर में, लिआ, राहेल और पशुओं के लिए सेवा करता रहा।(उत्पत्ति 31:41)

शुक्रवार – उत्पत्ति 30 – याकूब और युसूफ के बेटों को, इस्राएल के बारह गोत्रों के पूर्वज होना था।(उत्पत्ति 46:3 और निर्गमन 1:1–7)

शनिवार – उत्पत्ति 31– परमेश्वर याकूब को वापिस लाया, ठीक वैसे ही जैसे उसने इस्राएल को, हमारे दिनों में, वापिस अपनी भूमि में लाने की प्रतिज्ञा की थी।(यिर्मयाह 30:3; 31:8–11)

परिचय **4** चरण

चौथे चरण में चार सप्ताह है। आप नियमित रूप से लगातार बाईबल पढ़ रहे है इसलिए अब आपको कोई समस्या नही होगी।

- इन चार सप्ताहों में हम उत्पत्ति से कुलपतियों के विषय में और मत्ती से यीशु के जीवन के विषय में पढेंगे।
- युसूफ के जीवन (उत्पत्ति 37–50) और यीशु मसीह के जीवन के बीच की समानताओं को ध्यान से देखियें। (पृष्ठ 13 पर उनमें से कुछ की सूचि दी गयी है)
- हमेशा नियमित रूप से, ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक पढ़ना याद रखें।

चरण **4** सप्ताह 7

रविवार	मत्ती 15
सोमवार	मत्ती 16
मंगलवार	मत्ती 17
बुद्धवार	मत्ती 18
बृहस्पतिवार	मत्ती 19
शुक्रवार	मत्ती 20
शनिवार	मत्ती 21

रोमियों के अधीन इस्राएल

■ यीशु के समय में, इस्राएल के लोगों और भूमि पर रोम का प्रभुत्व पूरी तरह से था। इसीलिए बहुत से यहूदी देशभक्त, ऐसे किसी भी व्यक्ति के पीछे हो सकते थे जो उनसे रोमियों से स्वतंत्र कराने का वायदा करता।

■ स्पष्ट है कि नासरत के यीशु में ऐसा करने की सामर्थ थी। उसके द्वारा किये गये चमत्कारों ने इस बात को प्रदर्शित किया। उसने पहले ही सभी मानवीय प्रलोभनों को त्याग दिया था। उसका राज्य भविष्य में आना था जो पिता के द्वारा उसको दिया जाने वाला था। सबसे पहले उसको पाप पर विजय पाकर, मानवजाती को पाप और मृत्यु के बन्धन से मुक्त करना था। तभी उनको इस पृथ्वी का राजा होने के योग्य होना था।

■ उसके अनुयायियों को भी, दूसरों पर शासन करने से पहले, अपने ऊपर शासन करना सीखना चाहिये। उनका संबंध इस संसार की राजनीति से नही बल्कि परमेश्वर के राज्य से होना चाहिये।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – मत्ती 15 – यीशु जानते थे कि पाप मनुष्य के हद्वय (मस्तिष्क से) उठता है। इसलिए इसको साफ करने की आवश्यकता है। (पद 18–19)

सोमवार – मत्ती 16 – यीशु मसीह (यहूदियों का मसीहा) है और परमेश्वर का पुत्र (पद 16) है। उसने अपनी मृत्यु के विषय में पहले ही बता दिया था (पद 21)। उसके चेले होने के लिए अपने आप का इन्कार करना चाहिये। (पद 24–26)

मंगलवार – मत्ती 17 – यीशु का रूप परिवर्तन, भविष्य के राजा के रूप में उनका पूर्वानुभव था। देखें मत्ती 15:28 और 2पतरस 1:16–17

बुद्धवार – मत्ती 18 – 'बालकों के समान' (पद 3) बनने का अर्थ है परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना। (बचपना नही)

बृहस्पतिवार – मत्ती 19 – जो मसीह का अनुसरण करेंगे उनको आने वाले राज्य में अनन्त जीवन और आनन्द दिया जायेगा।(पद 27–29)

शुक्रवार – मत्ती 20 – यीशु जानते थे कि उनके साथ क्या होने जा रहा था (पद 18–19) पुराने नियम में यह पहले से बता दिया गया था। उनको विश्वास था कि उनको मृतकों में से जिलाया जायेगा।(पद 19)

शनिवार – मत्ती 21– पद 1–11, जकर्याह 9:9 को आंशिक रूप से पूरा करता है। जब यीशु इस संसार के राजा के रूप में पुनः आयेंगे तो यह सम्पूर्ण होगा।

युसूफ यीशु के समान

■ युसूफ के जीवन के दिव्य लेख (उत्पत्ति 37–50) में यीशु के जीवन की बहुत सी समानतायें है। यह पुराने नियम के, आने वाले मसीह की ओर किये गये, बहुत से संकेतों में से एक है और यहां तक कि उसके अपने लोगों के द्वारा उसको त्यागे जाने का पूर्वाभास है।

रविवार	**उत्पत्ति 32**
सोमवार	**उत्पत्ति 33**
मंगलवार	**उत्पत्ति 37**
बुद्धवार	**उत्पत्ति 39**
बृहस्पतिवार	**उत्पत्ति 40**
शुक्रवार	**उत्पत्ति 41**
शनिवार	**उत्पत्ति 42**

युसूफ	यीशु
1. युसूफ से उसके पिता ने प्रेम किया।	यीशु परमेश्वर का प्रिय एकलौता पुत्र था।
2. युसूफ से उसके भाईयों ने घृणा की।	यीशु को उसके अपने लोगों ने अस्वीकार कर दिया था।
3. युसूफ ने अनुभव के द्वारा धैर्य सीखा।	यीशु को दुख देकर सिद्ध बनाया गया।
4. युसूफ को जेल में रखा गया लेकिन बाद में छोड़ा गया।	परमेश्वर ने यीशु को कब्र के बन्धनों से छुड़ाया था।
5. युसूफ को जेफनेथ–पानेय्याह (जगत का उद्धारकर्ता कहा गया) कहा गया।	यीशु जगत का उद्धारकर्ता है।
6. युसूफ ने अपने भाईयों को बचाया और उन्हें क्षमा किया।	यीशु अपने लोगों को क्षमा करेंगे और उन्हें बचायेंगे।
7. युसूफ को राजा की बराबरी तक पहुचांया गया।	यीशु को परमेश्वर का नाम दिया गया और वे इस संसार के राजा होंगे।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – उत्पत्ति 32 –याकूब का नाम बदलकर इस्राएल (परमेश्वर का राजकुमार) किया गया क्योंकि उसने परमेश्वर पर विश्वास किया।

सोमवार – उत्पत्ति 33 –याकूब ने अब स्वीकार किया कि उसकी सम्पत्ति (पद 11), उसके बच्चे (पद 5) और उसको मिलने वाली सारी आशीषें परमेश्वर की ओर से है।

मंगलवार – उत्पत्ति 37 – युसूफ को एक पारिवारिक याजक बनाया गया। 'अंगरखा' याजकपन का वस्त्र था। इससे उसके भाई जलने लगें। उसके स्वप्न, परमेश्वर का भविष्य का प्रकाशन था।

बुद्धवार – उत्पत्ति 39 – यीशु के समान, युसूफ ने विश्वासपूर्वक दूसरों की सेवा की और प्रलोभनों का विरोध किया। (पद 7–8)

बृहस्पतिवार – उत्पत्ति 40 – यहां तक कि जेल में भी उसने सेवा जारी रखी, लेकिन उसको शीघ्र ही भूला दिया गया (पद 23), यहां भी यीशु के समान ही, वह जिनकी सहायता करने आया था उन्हीं के द्वारा उसको भूला दिया गया।

शुक्रवार – उत्पत्ति 41 – यह परमेश्वर ही था जिसने युसूफ को छुड़ाया।

शनिवार – उत्पत्ति 42 – अपने भाईयों के पहचानने से पहले युसूफ उनको जानता था। यह ठीक उसी तरह है जैसे इस्राएल आज तक अपने उद्धारकर्ता को नही पहिचानता है।

चरण **4** सप्ताह 9

रविवार	मत्ती 22
सोमवार	मत्ती 23
मंगलवार	मत्ती 24
बुद्धवार	मत्ती 25
बृहस्पतिवार	मत्ती 26
शुक्रवार	मत्ती 27
शनिवार	मत्ती 28

यीशु हमारे समान और तौभी परमेश्वर के समान

■ मरियम से पैदा होने के कारण यीशु मरियम का पुत्र था और इसलिए उसकी हमारे समान मानवीय प्रकृति थी। वह परमेश्वर का पुत्र भी है और परमेश्वर की योजना का केन्द्र बिन्दु है।

■ सुसमाचार के ये दो तथ्य महत्वपूर्ण है। मत्ती से निम्न पदों को पढियें जो इस अद्‌भुत सत्य के विषय में बताते है। (मत्ती 1:1,18,23; 3:16—17; 16:16; 22:41—45; 26:63; 27:40,43,54)

■ परमेश्वर का पुत्र एक औरत से पैदा हुआ जिससे कि वह मानव जाति को बचा सके। परमेश्वर उसका पिता है। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम हमें यीशु मसीह के द्वारा दिखाया गया।

■ यीशु ने हमारी अनैतिक और स्वेच्छाचारी प्रकृति में होते हुए भी, अपने पिता की इच्छानुसार कार्य करते हुए परमेश्वर के पुत्र के समान जीवन जिया।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार — मत्ती 22 — ब्याह का वस्त्र,(पद 11) पाप के ढकने को प्रदर्शित करता है जिसकी हम सब को आवश्यकता है, लेकिन तभी यदि मसीह के आने पर हम स्वीकार किये जाते है।

सोमवार — मत्ती 23 — यीशु ने उन पापियों पर कभी दोष नही लगाया जो अच्छा करने का प्रयास करते है, लेकिन जो अच्छा होने का दिखावा करते है वे उसकी ओर से बड़े दोष के भागी होंगे।

मंगलवार — मत्ती 24 — इस अध्याय में यीशु ने, यहूदियों के 70 ईसवी में तितर बितर होने और अपने वापिस आने के समय की घटनाओं के विषय में भविष्यवाणी की है। (पद 30)

बुद्धवार — मत्ती 25 — इस अध्याय में तीन दृष्टान्त है जो इस विषय में बताते है कि मसीह के आने पर न्याय होगा। हमें तैयार रहने की आवश्यकता है। (पद 13)

बृहस्पतिवार — मत्ती 26 — यीशु अपने सबसे अन्धियारें समय में पहुंच गये जैसी कि उन्होंने पहले से ही भविष्यवाणी की थी। रोटी और दाखमधु उनके जीवन देने का प्रतीक है। (पद 26—29)

शुक्रवार — मत्ती 27 — सब जानते थे कि यीशु निर्दोष थे लेकिन तौभी उनको क्रूस पर चढ़ा दिया गया। क्रूस पर लगाये गये शीर्षक ने उनके सच्चे लक्ष्य को बताया। (पद 37)

शनिवार — मत्ती 28— प्रभु वास्तव में जी उठे और उनकी विजय सम्पूर्ण हुयी। परमेश्वर के सम्पूर्ण अधिकार के साथ उनका कार्य प्रेरितों के द्वारा जारी रहा। (पद 18—20)

रविवार	उत्पत्ति 43
सोमवार	उत्पत्ति 44
मंगलवार	उत्पत्ति 45
बुद्धवार	उत्पत्ति 46
बृहस्पतिवार	उत्पत्ति 47
शुक्रवार	उत्पत्ति 49
शनिवार	उत्पत्ति 50

प्रतिज्ञा की गयी भूमि में दफनाना

■ अधिकांश कुलपतियों ने अपने को कनान की भूमि में दफनानें के लिए कहा, इससे उनके, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में, विश्वास का पता चलता है।

■ परमेश्वर ने वह भूमि उनको सदा सर्वदा के लिए देने की प्रतिज्ञा की थी। इसका अर्थ है कि एक दिन अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए वह उनको मृतकों में से जिलायेगा।(प्रेरितों के काम 7:5, लूका 13:28–30)

■ उनको सदा के लिए भूमि देने की प्रतिज्ञा उसी समय के लिए नही थी बल्कि भविष्य के लिए थी और इसका प्रमाण यह है कि उनके विषय में लिखा है कि वे इस पृथ्वी पर 'परदेसी और अनजाने' थे और अभी तक वे उसके अधिकारी नही है।(इब्रानियों 11:13, 39–40)

■ अब्राहम ने सारा को दफनानें के लिए भूमि का एक टुकड़ा खरीदा। अब्राहम को स्वंय भी और साथ ही इसहाक, रिबेका और लिआ (उत्पत्ति 49:29–31) और याकूब को भी वही दफनाया गया। (उत्पत्ति 50:13)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – उत्पत्ति 43 –युसूफ अपने सब भाईयों से मिला और वे उसके सामने झुके (पद 28) युसूफ के स्वप्न को याद कीजिये? क्या युसूफ ने अपने प्रबन्धक को परमेश्वर के विषय में सिखाया? (पद 23) जो लोग इस्राएल के परमेश्वर के विषय में जानते है उनको दूसरों को बताना चाहिये।

सोमवार – उत्पत्ति 44 –युसूफ के भाईयों से उनकी गलती को स्वीकार कराया गया।(उत्पत्ति 42:21; 44:16) ध्यान दें कि युसूफ से निवेदन करने वालों में यहूदा पहला था। पृष्ठ 10 पर दियें गये चार्ट को देखें।

मंगलवार – उत्पत्ति 45 – युसूफ ने बदला लेने का मन नही बनाया था। वह जानता था कि उसके भाईयों ने उसको दुख दिया था। (पद 5–8) इस बात में वह यीशु के समान था।

बुद्धवार – उत्पत्ति 46 – यहां याकूब के वंशजों के मिस्र से निर्गमन की एक भविष्यवाणी है।(पद 3–4) देखें निर्गमन 3:8

बृहस्पतिवार – उत्पत्ति 47 – अपने विश्वास के कारण (इब्रानियों 11:8–16)ही याकूब की यह इच्छा थी कि उसको प्रतिज्ञा की हुयी भूमि (पद 29–30) में दफनाया जायें।

शुक्रवार – उत्पत्ति 49– यहूदा एक चुना हुआ गोत्र था जिससे 'शीलो' आयेगा। इस नाम का अर्थ हैः 'जिसका यह है', और यह यीशु के लिए है। देखें यहेजकेल 21:27

शनिवार – उत्पत्ति 50 – युसूफ भी चाहता था कि उसको कनान में दफनाया जायें, क्योंकि उसका विश्वास भी वैसा ही था (इब्रानियों 11:22)और वह प्रतिज्ञाओं में विश्वास रखते हुए मर गया।(पद 24–25)

चरण 5 परिचय

■ पाचवें चरण में 16 सप्ताह है और इसके साथ ही आप को परमेश्वर का वचन पढ़ते हुए आधा वर्ष हो जायेगा। आप परमेश्वर के कार्य और प्रेम के अद्भुत लेख को पहले ही पढ़ चुके है।

■ जगह कम होने की वजह से संक्षिप्त वर्णन ही दिया गया है। अब आप स्वंय भी अध्यायों से महत्वपूर्ण बिन्दुओं को चुन सकते है।

■ कभी–कभी पढ़ते हुए कुछ बातें कठिन या अस्पष्ट हो सकती है। परमेश्वर ने बाईबल की रचना इस तरह से की है ताकि हम जीवन भर रूचिकर और उत्तेजक बातें इसमें खोजते रहे। परमेश्वर के वचन में जानने के लिए इतनी बातें है कि उनकी खोज कभी समाप्त नही होती है।

■ हम बहुत जल्द बाईबल की आवश्यक शिक्षाओं और सन्देश को सीख जायेंगे, और हमें ऐसा करना भी चाहिये। यदि हमारे सामने कोई प्रश्न आता है तो उसका उत्तर उसी अध्याय को देने दें। हमारे प्रश्नों के उत्तर प्रायः उसी अध्याय में रहते है।

■ जो आपने अब तक पढा है उसको एक बार देखियें, दिये गये सन्दर्भो का या शब्दकोष का प्रयोग कीजिये। (शब्दकोष में बाईबल के शब्दों की एक क्रमवार सूचि होती है और वे बाईबल में कहां पर है यह भी देखा जा सकता है।)

■ पेज 60 से 63 पर दी गयी बाईबल की शिक्षाओं में जो सन्दर्भ दिये गये है उनको बाईबल से देखिये।

■ प्रतिदिन पढ़ें, ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक लगातार पढ़ें।

रविवार	मरकुस 1
सोमवार	मरकुस 2
मंगलवार	मरकुस 3
बुद्धवार	मरकुस 6
बृहस्पतिवार	मरकुस 7
शुक्रवार	मरकुस 8
शनिवार	मरकुस 9

मरकुस के द्वारा, यीशु के जीवन का दिव्य प्रेरित लेख

■ मरकुस (यूहन्ना मरकुस) पतरस का एक मित्र था (1 पतरस 5:13) और प्रेरित पौलुस का एक साथी था।(प्रेरितों 12:12)

■ यीशु के जीवन का उसका लेख समय से पूर्व का हो सकता है। यह निश्चय ही छोटा है और उसमें अति अवश्यकता पर जोर दिया गया है।

■ सन्देश की अति–आवश्यकता और प्रभाव से हम अछूतें नही रहेंगे, यदि हम इसको आग्रहपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक पढ़ें।

■ मरकुस ने 'दुष्टात्मा' के विषय में बहुत से सन्दर्भ दिये है। कोई भी दुष्ट दिव्य शक्ति नही है। पृष्ठ 62 पर 29 न0 देखें।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – मरकुस 1 –यीशु परमेश्वर के पुत्र है (पद 1,11) उसका प्रेम महान है। मरकुस के द्वारा लिखे गये उसके बहुत से चमत्कार इस बात को प्रमाणित करते है।

सोमवार – मरकुस 2 –यीशु में हमें क्षमा मिल सकती है (पद 10) लेकिन जो ऐसा सोचते है कि उनको उद्धार की आवश्यकता नही है उनको 'स्वंय–धार्मिकता' में कोई सहायता नही मिल सकती (पद 17)

मंगलवार – मरकुस 3 – 'मन की कठोरता' (पद 5), विश्वास में एक अन्य बाधा है। प्रेरितों को चुना गया। (पद 13–19)

बुद्धवार – मरकुस 6 – यहून्ना बपतिस्मादाता बुराई के विरूद्ध बोलने से नही डरता था और वह मृत्यु तक विश्वासी है।

बृहस्पतिवार – मरकुस 7 – कभी–कभी हमें अपने मन के विचारों को त्यागना पड़ता है (पद 7) हमें यह अवश्य निश्चय करना चाहिये कि हमारा विश्वास, पवित्रशास्त्र के अनुसार हो।

शुक्रवार – मरकुस 8– यीशु ने भोजन के लिए धन्यवाद दिया (पद 6) क्या हम इन दैनिक आशीषों के लिए कृतज्ञता प्रगट करते है?

शनिवार – मरकुस 9 – यीशु को इस बात का ज्ञान था कि आगे उनके साथ क्या होने वाला था और इस बात को मरकुस ने तीन पदों में बताया है (देखें मरकुस 8:31, 9:31, 10:33)

रविवार	निर्गमन 1
सोमवार	निर्गमन 2
मंगलवार	निर्गमन 3
बुद्धवार	निर्गमन 4
बृहस्पतिवार	निर्गमन 5
शुक्रवार	निर्गमन 6
शनिवार	निर्गमन 7

मिस्र में बन्धुआई

■ मिस्र में फिरोन की बन्धुआई में, इस्राएल के अनुभव को, पवित्र शास्त्र में, हमारी, पाप और मृत्यु में बन्धुआई से जोड़ा गया है।

■ इसके बाद मिस्र संसार में अपने अधर्म और पाप का संकेत बन गया। हमें इससे बचने की जरूरत है और इसके बाद लौटने की इच्छा नही करनी है।

■ 'निर्गमन'– जो मूसा के द्वारा लिखी गयी बाईबल की दूसरी पुस्तक का नाम है, इसका अर्थ है 'बाहर आना'

■ 'मिस्र से बाहर बुलाना', परमेश्वर के बच्चों के लिए एक बहुत ही बड़ी आशीष थी। पदों की इस श्रंखला पर ध्यान दीजियेः निर्गमन 4:22, होशे 11:1, मत्ती 2:15, इब्रानियों 2:15, रोमियों 8:21 और प्रकाशितवाक्य 7:15।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – निर्गमन 1 – दासत्व में होने के बावजूद भी इस्राएल, मिस्र में फलाफूला। दुष्ट लोगों ने परमेश्वर के लोगों को समाप्त करने का प्रयास किया लेकिन अन्त में वे असफल रहें।

सोमवार – निर्गमन 2 – मूसा को, परमेश्वर के लोगों को छुड़ाना था और उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था देनी थी। एक माँ को अपने बच्चें को पालने के लिए वेतन दिया गया! (पद 9) मूसा के माता–पिता के विश्वास का पुरूस्कार उन्हें मिला। (इब्रानियों 11:23)

मंगलवार – निर्गमन 3 – निर्वासन में मूसा को परमेश्वर ने अपना कार्य करने के लिए बुलाया। (पद 6) 'अब्राहम का परमेश्वर' उन प्रतिज्ञाओं का स्मरण है जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। (जैसे– उत्पत्ति 15)

बुद्धवार – निर्गमन 4 – 'इस्राएल मेरा पहलौठा पुत्र है' यहां (पद 22–23) परमेश्वर ने फिरौन को दंसवी महामारी की चेतावनी पहले ही दे दी थी। (निर्गमन 12:29)

बृहस्पतिवार – निर्गमन 5 – फिरौन के व्यवहार (पद 2) की तुलना, उसके बाद के दिनों में अश्शूरियों के व्यवहार से कीजिये। (2राजा 18:35)

शुक्रवार – निर्गमन 6 – अब्राहम से की गयी सात प्रतिज्ञायें (उत्पत्ति 12:1–3), इस्राएल से की गयी सात प्रतिज्ञाओं से मेल खाती है। (पद 6–8)

शनिवार – निर्गमन 7– फिरौन ने एक चमत्कार दिखाने के लिए कहा (पद 9), लेकिन उसने अपना मन नही बदला। परमेश्वर हमें प्रमाण देता है। क्या हम इस पर ध्यान देते है?

चमत्कार

रविवार	मरकुस 10
सोमवार	मरकुस 11
मंगलवार	मरकुस 12
बुद्धवार	मरकुस 13
बृहस्पतिवार	मरकुस 14
शुक्रवार	मरकुस 15
शनिवार	मरकुस 16

■ मरकुस के लेखों में, यीशु के द्वारा किये गये बहुत से चमत्कारों का वर्णन है।

■ कुछ लोग चमत्कारों को असम्भव या अनावश्यक कहकर अनदेखा करने का प्रयास करते है। लेकिन यदि थोड़ा सा भी विचार इन पर किया जाये तो समझ में आ जाता है कि ये कितने महत्वपूर्ण है।

■ इतिहास के अलग–अलग समयों में चमत्कार अलग–अलग तरह से किये गये:

(अ) फिरौन के लिए दस महामारियां
(ब) नये नियम के समय में, चंगाईयों के चमत्कार
(स) उसके बाद के दिनों में बाईबल के संरक्षण का चमत्कार
(द) आज इस्राएल के विद्यमान होने का चमत्कार

■ चमत्कार, मनुष्यों के लिए किया जाने वाला, परमेश्वर का एक ऐसा कार्य है जिसके द्वारा वह उनको विश्वास में लाता है या उनको आने वाले न्याय के लिए चेतावनी देता है। वे इस बात का प्रमाण थे कि परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं और यीशु के द्वारा कार्य किया।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – मरकुस 10 –यीशु अपने सर्वोत्तम जीवन के द्वारा मानवजाति को छुड़ाने आया। (पद 43–45) 'दाऊद का पुत्र', (पद 47) मसीहा को दिया गया शीर्षक था। 2शेमूएल 7:12–16; यशायाह 9:6–7 में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को देखें।

सोमवार – मरकुस 11 –यीशु अपने जीवन के अन्तिम सप्ताह में येरूशलेम में आया। अंजीर का वृक्ष (पद 12–14) इस्राएल और यीशु के महत्वपूर्ण कार्य का एक संकेत था। देखें मरकुस 13:28–29

मंगलवार – मरकुस 12 – 'अब्राहम का परमेश्वर' (पद 26), निर्गमन 3:6 की एक और प्रतिध्वनि है जो हमने पिछले सप्ताह पढ़ा था।

बुद्धवार – मरकुस 13 – पद 33, 'सावधान रहो और प्रार्थना करते रहो', यह हमारे लिए एक अच्छी सलाह है। क्योंकि मसीह का आना निकट है।

बृहस्पतिवार – मरकुस 14 – रोटी तोड़ना आने वाले राज्य की प्रतिक्षा करना है। (पद 25) पतरस के डर पर ध्यान दीजिये। (पद 66–71) इसकी तुलना प्रेरितों के काम 4:31 से कीजिये। केवल मसीह के जी उठने की सच्चाई के द्वारा ही यह बदलाव सम्भव है!

शुक्रवार – मरकुस 15– यीशु की मृत्यु यह दिखाती है कि वह परमेश्वर का पुत्र था (पद 39) तो फिर उसके पुर्नरूत्थान ने इस बात को कितना सिद्ध किया होगा!

शनिवार – मरकुस 16 – आदम के अदन छोड़ने के बाद सबसे बड़ी सुबह! यीशु, परमेश्वर के पुत्र, उद्धारकर्ता और एक आने वाले राजा है। इस सुसमाचार पर विश्वास के बाद ही बपतिस्मा होना चाहिये। (पद 15–16)

चरण **5** सप्ताह 14

रविवार	निर्गमन 8
सोमवार	निर्गमन 9
मंगलवार	निर्गमन 10
बुद्धवार	निर्गमन 11
बृहस्पतिवार	निर्गमन 12
शुक्रवार	निर्गमन 13
शनिवार	निर्गमन 14

मिस्र से मुक्ती

■ निर्गमन में हम बहुत से चमत्कारों को देखते है, जो ये बताते है कि परमेश्वर ही केवल एकमात्र परमेश्वर है।

■ प्रत्येक महामारी, मिस्र में कहे जाने वाले असामर्थी ईश्वरों के लिए एक सीधी चुनौती थी।

■ नौ बार मिस्र के इन्कार करने के बाद, इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए, मिस्र के पहिलौठों की हत्या (मृत्यु की महामारी) हुयी, अपने लोगों, अपने पहिलौठे को छुड़ाने के लिए यह परमेश्वर का अन्तिम कार्य था।

■ मूसा की व्यवस्था में यहूदियों के द्वारा प्रत्येक वर्ष, फसह के पर्व में, मिस्र से छुड़ाये जाने और फसह के मेमने की हत्या (मृत्यु का दूत उन घरों के ऊपर से गुजरा जिन पर खून छिड़का गया था।) को याद किया जाता था।

■ यीशु मसीह, मसीहियों का 'फसह का मेमना' है जिसको परमेश्वर ने दिया। उसका खून पाप और मृत्यु से छुड़ाता है जैसा कि उसके अनुयायी प्रभु भोज में नियमित रूप से याद करते है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – निर्गमन 8 – मिस्र में जब चमत्कारों से इन्कार किया गया तो उन्होंने दस असम्भव संयोगों में विश्वास किया होगा! यह प्रश्न हमारे लिए भी हैः इस्राएल किस प्रकार मिस्र से बाहर आया?

सोमवार – निर्गमन 9 – 'मेरे लोग' (पद 1) इब्री (इस्राएल के बच्चे) परमेश्वर के गवाह है। (यशायाह 43:12, 21)

मंगलवार – निर्गमन 10 – हमें अपने बच्चों को और अपने बच्चों के बच्चों को भी परमेश्वर के मार्ग सीखाने चाहिये। (पद 2)

बुद्धवार – निर्गमन 11 – सात अध्यायों में 11 बार परमेश्वर कहता है कि 'तब तुम जानोगे'। परमेश्वर ने मिस्र को अपने अस्तित्व के पर्याप्त प्रमाण दिये, लेकिन तौभी उन्होंने उसका इन्कार किया।

बृहस्पतिवार – निर्गमन 12 – फसह का मेमना यीशु की ओर संकेत करता है, 'परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है' (यूहन्ना 1:29)

शुक्रवार – निर्गमन 13 – परमेश्वर ने इस्राएल को लाल समुद्र की ओर बढाया। (काफिलें के लिए, पलिश्ती जाने का सामान्य मार्ग नही है।) (पद 17–18)

शनिवार – निर्गमन 14– एक चमत्कारी रीति से लाल समुद्र को पार करना, (पद 22) इस्राएल के लिए बपतिस्में के समान था। देखें 1 कुरिन्थियों 10:1–2, मिस्रियों के लिए यह मृत्यु थी।

लूका द्वारा यीशु के जीवन का दिव्य प्रेरित लेख

रविवार	लूका 1
सोमवार	लूका 2
मंगलवार	लूका 4
बुद्धवार	लूका 5
बृहस्पतिवार	लूका 7
शुक्रवार	लूका 9
शनिवार	लूका10

■ लूका, जो कि एक चिकित्सक था, प्रेरित पौलुस का एक सहायक था; उसने 'प्रेरितों के काम' पुस्तक भी लिखी। देखें प्रेरितों के काम 1:1

■ उसने, रोमियों के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विपरीत, मसीह के जीवन की घटनाओं को क्रम से (पद 3) प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए देखेंः 1:5; 2:1; 3:1; 13:1; 21:24

■ यह लेख यीशु को, एक महान चिकित्सक और मनुष्य के पुत्र और उद्धारकर्ता के रूप में दिखाता है, सबसे पहले इस्राएल के लिए लेकिन अन्यजातियों के लिए भी वह उद्धारकर्ता है। देखें लूका 2:32

■ अध्याय 3 में लूका, एली के पुत्र युसूफ के द्वारा, (पद 23) यीशु की वशांवली, प्रस्तुत करता है। यह वशांवली दाऊद के पुत्र नातान से होते हुए पीछे की ओर परमेश्वर के द्वारा बनाये गये आदम तक जाती है। (पद 38) इसलिए दिखाया गया है कि यीशु सभी पुरूषों से सम्बन्धित है, क्योंकि हम सब आदम के वंश है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – लूका 1 –परमेश्वर का पुत्र (पद 32–35)येरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर सदा सर्वदा के लिए (पद 33) बैठेगा। वह एक कुवांरी का पुत्र है (पद 27) और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर उसका पिता है। (पद 31, 35)

सोमवार – लूका 2 –यीशु, दाऊद के नगर में जन्मा, वह जब राजा के रूप में आयेगा तो इस संसार को आनन्द (पद 10) और शान्ति (पद 14) देगा।

मंगलवार – लूका 4 – यीशु परखा गया और फिर, जैसा यशायाह 61:2 में पहले से बताया गया था, उन्होंने प्रचार और छुटकारें का अपना महान काम प्रारम्भ किया।

बुद्धवार – लूका 5 – यीशु कहते है, ''मेरे पीछे चला आ'' (पद 11,27) क्या हम में ऐसा करने का साहस है? ऐसा करने के लिए हमें एक नये मनुष्यत्व की आवश्यकता है।(पद 38) पतरस इस बात को जानता था। (पद 8)

बृहस्पतिवार – लूका 7 – जब भी किसी ने विश्वास दिखाया तो यीशु उसकी ओर मुड़ा।(पद 9) आज भी वह हममें उस विश्वास को देखना चाहता है। यीशु सब के हृद्वयों को जानते है। (पद 39–40, 47)

शुक्रवार – लूका 9– यीशु वास्तव में सबसे बड़े भविष्यद्वक्ता थे, लेकिन वह परमेश्वर के पुत्र, मसीह भी थे। (पद 19–20)

शनिवार – लूका 10 – यह ज्ञान कि यीशु कौन है, घमण्डी लोगों से छुपा कर रखा गया है। (पद 21) अच्छा सामरी सबके लिए एक चुनौती है।

चरण **5** सप्ताह 16

रविवार	निर्गमन 16
सोमवार	निर्गमनं 17
मंगलवार	निर्गमन 19
बुद्धवार	निर्गमन 20
बृहस्पतिवार	निर्गमन 24
शुक्रवार	निर्गमन 25
शनिवार	निर्गमन 32

मरूस्थल की यात्रा

■ सीनै के मरूस्थल से इस्राएल की यात्रा में हमारे लिए एक शिक्षा निहित है। हमें 'बन्धुआई' से प्रतिज्ञा की गयी भूमि (परमेश्वर का राज्य) तक की यात्रा करने के लिए बुलाया गया है।

निर्गमन की यात्रा

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – निर्गमन 16 – शीघ्र ही इस्राएल परमेश्वर की भलाई को भूल गया और बुड़बुड़ाने लगा। उनको प्रतिदिन 'मन्ना' (पद 14–18) इकट्ठा करना था और खाना था – ठीक वैसे ही जैसे हम प्रतिदिन पवित्र शास्त्र के भोजन को ग्रहण करते है।

सोमवार – निर्गमन 17 –वह पत्थर जिस को लाठी से पीटा गया (पद 6) वह यीशु मसीह की ओर संकेत करता है जो जीवन का स्रोता है। (1 कुरिन्थियों 10:4)

मंगलवार – निर्गमन 19 – इस्राएली परमेश्वर के विशेष लोग थे (पद 5–6) ठीक वैसे ही मसीही लोग है। (1पतरस 2:9)

बुद्धवार – निर्गमन 20 – दस आज्ञायें, इस्राएल की प्रसन्नता के लिए मार्ग दर्शक थी। (देखें मरकुस 12:28–34 और लूका 10:25–28)

बृहस्पतिवार – निर्गमन 24 – इस्राएल ने कहा कि वह आज्ञाकारी रहेगा (पद 7) लेकिन वह असफल रहा। हम सब को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

शुक्रवार – निर्गमन 25 – छावनी के बीच में पवित्र तम्बू मसीह की ओर संकेत करता है जो हमारे जीवन के बीच में रहना चाहिये।

शनिवार – निर्गमन 32– यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर की अराधना उसके तरीके से करें, अपने तरीके से नही। (पद 5) मनुष्य अपने लिए ईश्वर बनाता है लेकिन यह हमेशा अपमानजनक होता है।

प्रार्थना और अराधना

रविवार	लूका 11
सोमवार	लूका 12
मंगलवार	लूका 13
बुद्धवार	लूका 14
बृहस्पतिवार	लूका 15
शुक्रवार	लूका 16
शनिवार	लूका 17

■ प्रभु की प्रार्थना (लूका 11) में वे सारे तत्व विद्यमान है जो एक अच्छी प्रार्थना में होने चाहिये– विनम्रता, प्रसन्नसा, परमेश्वर की इच्छा की मान्यता, उसका आने वाला राज्य, उसका दैनिक प्रबन्ध और क्षमा और सामर्थ की हमारी अपनी आवश्यकता।

■ परमेश्वर पवित्र है (लूका 11:2) यदि हम परमेश्वर की निकटता में आना चाहते है तो उसके द्वारा मसीह में किये गये प्रबन्ध के द्वारा हमारे पाप ढापे जाने चाहिये।

■ यीशु मार्ग, सच्चाई और जीवन है। कोई दूसरा मार्ग नही है, कोई दूसरी सच्चाई नही है, और उसके बिना कोई अनन्त जीवन नही है।

■ मनुष्यों और परमेश्वर के बीच केवल मसीह ही वास्तविक बीचवई है। (1तिमुथियुस 2:5) मसीह के द्वारा ही हमें अपनी प्रार्थना और अराधना, परमेश्वर को अर्पित करनी चाहिये।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – लूका 11 –हमारा रोज का भौतिक और आत्मिक भोजन परमेश्वर की ओर से आता है और हमें इन दोनों के लिए उसका धन्यवाद करना चाहिये।

सोमवार – लूका 12 –पद 31। यदि हम सबसे पहले उसके राज्य और धर्म की खोज करें तो हमारी अन्य सभी वास्तविक आवश्यकताओं को वह पूरी करेगा।

मंगलवार – लूका 13 – यीशु ने यहूदियों के मनफिराने का इन्तजार किया ताकि वह उन्हें बचा सकें। (पद 34) शीघ्र ही एक दिन वे सब मनफिरायेंगे। (पद 35 और जकर्याह 12:10)

बुद्धवार – लूका 14 – हमारे जीवन में कोई चीज ऐसी नही होनी चाहिये जो हमें परमेश्वर के इस निमन्त्रण को स्वीकार करने से रोक सके। (पद 15–20) नम्रता मसीह का मार्ग है। (पद 11)

बृहस्पतिवार – लूका 15 – पुरूष और स्त्री सब 'मरें हुए' है जब तक कि वे परमेश्वर की ओर न मुड़े। (पद 24) लेकिन दृष्टान्त के पिता के समान ही वह मनफिराने वालों को प्रसन्नता से आशीष देता है।

शुक्रवार – लूका 16– 'मूसा और भविष्यद्वक्ता' और यीशु का पुर्नरूत्थान, सब के लिए पर्याप्त प्रमाण है। (पद 31)

शनिवार – लूका 17 – फरीसी मसीह की प्रतिक्षा कर रहे थे लेकिन जब वह आया तो उन्होंने उसको नही पहचाना। वह उनके साथ उनके मध्य में था, और उन्होंने उसकी शिक्षाओं को ग्रहण नही किया। (पद 21)

चरण 5 सप्ताह 18

रविवार	लैव्यव्यवस्था 8
सोमवार	लैव्यव्यवस्था 10
मंगलवार	लैव्यव्यवस्था 16
बुद्धवार	लैव्यव्यवस्था 17
बृहस्पतिवार	लैव्यव्यवस्था 23
शुक्रवार	लैव्यव्यवस्था 25
शनिवार	लैव्यव्यवस्था 26

तम्बू

■ तम्बू, इस्राएल की मरूस्थल में यात्रा के दौरान, उनकी अराधना का केन्द्र बिन्दु था।

■ तम्बू में परम पवित्र स्थान में केवल महायाजक को ही जाने की अनुमति थी और वह वर्ष में एक बार, प्राश्चित के दिन उसमें जाकर सम्पूर्ण राष्ट्र की क्षमा के लिए प्रार्थना करता था।

■ जिस उद्देश्य के लिए व्यवस्था और तम्बू बनाये गये थे, उन सब बातों को यीशु मसीह ने पूरा किया।

लैव्यव्यवस्था

■ लैव्यव्यवस्था की पुस्तक याजकों (लेवी जाति से), बलिदान और सच्ची अराधना के महत्व के विषय में है।

1– वाचा का सन्दूक
2– परदा
3– धूप की वेदी
4– दीपदान
5– भेंट की रोटियों की मेज
6– हौदी
7– होमबलि की वेदी

तम्बू की योजना

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – लैव्यव्यवस्था 8 – यदि हम परमेश्वर की सेवा करना चाहते है तो हमें अपने हृद्वय को ध्यानपूर्वक तैयार करने की आवश्यकता है। (पद 5)

सोमवार – लैव्यव्यवस्था 10 –यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर की सेवा उसके तरीके से करें। (पद 3)

मंगलवार – लैव्यव्यवस्था 16 – प्राश्चित का दिन प्रत्येक वर्ष आता था; लेकिन मसीह ने अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। (इब्रानियों 9:12; 10:19–22)

बुद्धवार – लैव्यव्यवस्था 17 – लहू में जीवन है। (पद 11) मसीह के 'लहू' का अर्थ है, उसका जीवन देना। (इब्रानियों 13:20)

बृहस्पतिवार – लैव्यव्यवस्था 23 – यह अध्याय यहूदियों के प्रत्येक वर्ष के आत्मिक कलेण्डर को वर्णित करता है। इस प्रकार राष्ट्र को एकीकृत किया गया था।

शुक्रवार – लैव्यव्यवस्था 25 – इस्राएल की भूमि परमेश्वर की भूमि है, यद्यपि आज भी लोग इस बात को नही पहचानते है कि परमेश्वर उसका स्वामी है। (पद 23)

शनिवार – लैव्यव्यवस्था 26– पद 33। इस भविष्यवाणी की हर एक बात पूरी हुयी। इस्राएल परमेश्वर का साक्षी है, जो परमेश्वर के अस्तित्व की गवाही देता है, फिर चाहे वह आशीषों में हो या श्रापों में हो।

क्रूस का मार्ग

रविवार	लूका 18
सोमवार	लूका 19
मंगलवार	लूका 20
बुद्धवार	लूका 21
बृहस्पतिवार	लूका 22
शुक्रवार	लूका 23
शनिवार	लूका 24

■ यीशु जानते थे कि उनको क्रूस पर चढ़ाया जायेगा, लेकिन तौभी उन्होंने येरूशलेम जाने का निर्णय लिया। इन पदों से आप यह बात देख सकते है। लूका 9:51–53; 17:11; 19:28, 37, 41, 45, अन्ततः उनको शहर से बाहर क्रूस पर चढ़ा दिया गया। (इब्रानियों 13:12–14)

मन्दिर और शहर

■ हेरोद के मन्दिर को ढहाया जाना था (लूका 21:6) और शहर अन्यजातियों के द्वारा रौंदा जाना था। (लूका 21:24)

■ जिस पत्थर (यीशु) को राज मिस्त्रीयों ने निकम्मा ठहरा दिया (20:17) वह परमेश्वर के वास्तविक घर, अर्थात वे लोग जिनमें वह निवास करता है, उसकी नींव है। (इफिसियों 2:19–22)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – लूका 18 –जब हम परमेश्वर के पास आते है तो हमें अपनी अयोग्यता को मानना और नम्र होना अति आवश्यक है। (पद 14)

सोमवार – लूका 19 –राज्य की स्थापना भविष्य में होनी है– दृष्टान्त से देखा जा सकता है कि जब धनी व्यक्ति, जो यीशु को प्रदर्शित करता है, (पद 11–12) वापिस आयेगा।

मंगलवार – लूका 20 – यीशु अपने विषय में भजनसंहिता 110 का संदर्भ देते है कि वे परमेश्वर पुत्र और दाऊद के 'प्रभु' है। (पद 41–44)

बुद्धवार – लूका 21 – गैर यहूदियों से येरूशलेम का छुटकारा (पद 24)एक संसारिक आपदा (पद 25–26) के साथ होगा और मसीह के आने की घोषणा होगी। (पद 27)

बृहस्पतिवार – लूका 22 – यीशु ने, परमेश्वर के राज्य में, अपने चेलों के साथ रोटी तोड़ने की आशा की। (पद 16–18)

शुक्रवार – लूका 23– डाकू (पद 43)ने उस आने वाले राज्य (पद 42) पर विश्वास किया जिसमें यह पृथ्वी स्वर्ग के समान हो जायेगी।

शनिवार – लूका 24 – मसीह ने अपनी शिक्षा के द्वारा पुराने नियम से समझाया। (पद 25–27, 44–45) मृतकों में से जी उठने के बाद भी मसीह ने पुराने नियम का प्रयोग किया, जो एक सच्ची मसीहत के लिए अति आवश्यक है।

चरण 5 सप्ताह 20

रविवार	गिनती 14
सोमवार	गिनती 17
मंगलवार	गिनती 20
बुद्धवार	गिनती 21
बृहस्पतिवार	गिनती 22
शुक्रवार	गिनती 23
शनिवार	गिनती 24

गिनती की पुस्तक

■ गिनती, मूसा की चौथी पुस्तक, इसको गिनती इसलिए कहते है क्योंकि इसमें इस्राएल की दो बार जनगणना है। (गिनती 1 और 26 अध्याय)

■ मिस्र से निकलने के समय की लगभग सम्पूर्ण पीढ़ी अपने विश्वास की कमी के कारण, मरूस्थल में मर गयी। एक नयी पीढ़ी को अपना विश्वास प्रदर्शित करने का अवसर दिया गया।

■ गिनती में देखने को मिलता है कि किस प्रकार 12 जातियां मिलकर, कनान की भूमि पर अधिकार करने के लिए, एक राष्ट्र बन गयी।

मसीह और मरूस्थल की यात्रा

■ इस्राएल के अनुभव विभिन्न प्रकार से मसीह की ओर संकेत करते है।

■ गिनती में बहुत से उदाहरण देखने को मिलते है:

(1) कालेब– यहूदा जाति का एक विश्वासी व्यक्ति (14:24)

(2) यहोशू– यह इब्री नाम वही है जो यूनानी में यीशु नाम है और वह भी परमेश्वर के लोगों का अगुवा बना। (14:30)

(3) हारून– महायाजक। यीशु सबसे बड़ा महायाजक है। (इब्रानियों 7:11, 22)

(4) हारून की लाठी जो फूट निकली (17:8) नीचे दी गयी टिप्पणी देखें।

(5) पीटा गया पत्थर (निर्गमन 17:6 की तुलना गिनती 20:11, 1कुरिन्थियों 10:4 से करें)

(6) काँसे का सांप– मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने के समान (गिनती 21:8–9; यूहन्ना 3:14)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – गिनती 14 – पद 21। मनुष्य नही बल्कि परमेश्वर अपनी महिमा से इस पृथ्वी को भरने की प्रतिज्ञा को पूरा करेगा। हबक्कूक 2:14 से तुलना करें।

सोमवार – गिनती 17 –पद 8। एक मृत छड़ी से बादामों का फूट निकलना, मसीह और पुर्नरूत्थान की ओर संकेत करता है।

मंगलवार – गिनती 20 – मूसा को आज्ञा दी गयी कि वह पत्थर से बातें करें (पद 8)लेकिन उसने पत्थर को पीटा (।पद 11) और परमेश्वर को क्रोधित किया।

बुद्धवार – गिनती 21 – न तो तम्बू और न ही व्यवस्था के बलिदान इस अवसर पर इस्राएलियों की सहायता कर सकें, बल्कि परमेश्वर द्वारा बताया गया विश्वास, जो फिर से मसीह की ओर संकेत करता है।

बृहस्पतिवार – गिनती 22 – बलाम को इस्राएल को श्राप देने से रोकने के लिए, परमेश्वर के दूत ने एक विरोधी (इब्रानी शब्द 'शैतान' है) का काम किया।

शुक्रवार – गिनती 23 – परमेश्वर इस्राएल से (अब्राहम, इसहाक और याकूब सें) की गयी अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा।(पद19 और रोमियों 11:29)

शनिवार – गिनती 24– पद 17–19। यह यीशु के विषय में की गयी भविष्यवाणी है, जो अन्त के दिनों में प्रगट होकर इस्राएल की कष्ट के दिनों में सहायता करेगा। (पद 14)

यूहन्ना द्वारा यीशु के जीवन का दिव्य प्रेरित लेख

रविवार	यूहन्ना 1
सोमवार	यूहन्ना 3
मंगलवार	यूहन्ना 4
बुद्धवार	यूहन्ना 10
बृहस्पतिवार	यूहन्ना 11
शुक्रवार	यूहन्ना 15
शनिवार	यूहन्ना 17

■ यूहन्ना, वह चेला जिससे यीशु प्रेम करता था, उसने यीशु के कामों का एक गहरा और गम्भीर लेखा दिया। अध्याय 20 के 30–31 पद में उसने अपना उद्देश्य प्रगट किया।

■ उसने यीशु के विषय में बताया कि वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र और उसका प्रतिनिधि था जो सृष्टि निमार्ण से पहले से ही परमेश्वर के मस्तिष्क और योजना में था। इस प्रकार यीशु 'आदि में' था, यद्यपि वह जब तक अस्तित्व में नही आया जब तक की परमेश्वर के वचन (उद्देश्य या योजना) के द्वारा मसीह का जन्म नही हुआ। (देखें कि किस प्रकार पतरस ने इसका वर्णन किया 1पतरस1:19–20)

■ यीशु के वास्तविक और सन्तुलित दृष्टिकोण को समझने के लिए यह सुसमाचार बहुत ही ध्यानपूर्वक, निरन्तर और प्रार्थनापूर्वक पढ़ा जाना चाहिये। बहुत से लोग जो केवल यूहन्ना के सुसमाचार को पढ़ते है, उनका यीशु के विषय में दृष्टिकोण गलत है। याद रखिये कि परमेश्वर ने हमें चार सुसमाचार दिये है।

■ बाईबिल की शिक्षाओं के सारांश के लिए पृष्ठ 60–63 देखें।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – यूहन्ना 1 –यीशु हमें यह दिखाने आया कि परमेश्वर कैसा है। परमेश्वर स्वंय प्रगट नही हुआ। (पद 18) फिर भी यीशु को अस्वीकार किया जायेगा।

सोमवार – यूहन्ना 3 –परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करना महत्वपूर्ण है। (पद 15–18, 34–36) बपतिस्मा भी अति आवश्यक है। (पद 5)

मंगलवार – यूहन्ना 4 – यीशु कौन था इसके विषय में स्त्री की बढ़ती हुयी समझ पर ध्यान दीजिये। (पद 9,15,19,25,29)

बुद्धवार – यूहन्ना 10 – यीशु मसीह अपनी भेड़ों (जो उस पर विश्वास करते है और अनुसरण करते है) को अनन्त जीवन देगा। (पद 28)

बृहस्पतिवार – यूहन्ना 11 – पुर्नरूत्थान का अर्थ है कि सशरीर मृतकों में से जी उठना। आखिरी दिन में यीशु ने अपने चेलों को पुर्नरूत्थान में विश्वास करना सिखाया। (पद 24 और यूहन्ना 5:29)

शुक्रवार – यूहन्ना 15– क्या हम मसीह के मित्र है? (पद13) उसने अपनी मित्रता के लिए कुछ शर्तें ठहरायी है। (पद 10 और 14)

शनिवार – यूहन्ना 17 – यह उनके लिए यीशु की एक महान प्रार्थना है, जो उस समय उसके अनुयायी थे, और उनके लिए भी जो उनके द्वारा विश्वास में आने वाले थे। (पद 20)

रविवार	व्यवस्थाविवरण	1
सोमवार	व्यवस्थाविवरण	2
मंगलवार	व्यवस्थाविवरण	3
बुद्धवार	व्यवस्थाविवरण	6
बृहस्पतिवार	व्यवस्थाविवरण	8
शुक्रवार	व्यवस्थाविवरण	18
शनिवार	व्यवस्थाविवरण	28

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक

■ इस नाम का अर्थ है 'व्यवस्था की पुनरावृत्ति' देखें व्यवस्थाविवरण 17:18।

■ मूसा ने अपनी मृत्यु से ठीक पहले इतिहास को पुनः बताया और जो कुछ भी परमेश्वर ने उसके लोगों के साथ किया वह सब बताया। वह एक नयी पीढी को सम्बोधित कर रहा था, लेकिन परमेश्वर जानता था कि इस्राएल एक राष्ट्र के रूप में आज्ञाकारी नही रहेगा।

■ विश्वास को कैसे प्राप्त करें और उसे कैसे बनाये रखें, इसके अपरिवर्तनीय सिद्धान्तों के साथ उसने कार्य किया। यीशु मसीह ने भी इन्ही सिद्धान्तों को सिखाया और इनके अनुसार जीवन जिया।

■ लेकिन इस्राएल नही समझ सका और न ही वे आज्ञाकारी रहे। व्यवस्थाविवरण के 28 अध्याय में, परमेश्वर के द्वारा दी गयी, मूसा की भविष्यवाणी, यहूदियों के कष्टों का एक विस्तृत पूर्वानुमान है, विशेषकर 70 ईसवी तक।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – व्यवस्थाविवरण 1 – मिस्र को छोड़ने के बाद जितने लोग गिने गये उनमें से केवल दो लोग ही प्रतिज्ञा की गयी भूमि में प्रवेश कर पाये, कालेब (पद 36) और यहोशू (पद 38)

सोमवार – व्यवस्थाविवरण 2 – जिस पीढ़ी ने मिस्र को छोड़ा था उनमें से अधिकाशं लोग मरूस्थल में मर गये। देखें इब्रानियों 3:17–19

मंगलवार – व्यवस्थाविवरण 3 – यहोशू ने, कनान में जाने के लिए इस्रालियों का नेतृत्व किया। (पद 21) यीशु उन सब का अगुवा है जो उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, वह परमेश्वर के राज्य में जाने के लिए उनका नेतृत्व कर रहा है।

बुद्धवार – व्यवस्थाविवरण 6– परमेश्वर का वचन हमारे हृद्दय में होना चाहिये। (पद 6) हमें यह अपने बच्चों को सिखाना चाहिये और हमेशा इसके विषय में बात करनी चाहिये। (पद 7)

बृहस्पतिवार – व्यवस्थाविवरण 8 – वास्तव में हम परमेश्वर के वचन के बिना जीवित नही रह सकते है।(पद 3) यीशु यह जानते थे। (मत्ती 4:4)

शुक्रवार – व्यवस्थाविवरण 18– मूसा के समान (पद 15,18) यीशु एक भविष्यद्वक्ता है, जिसकी बातों को हमें ध्यानपूर्वक सुनना चाहिये। प्रेरितों के काम 3:22–26 के साथ तुलना करें।

शनिवार – व्यवस्थाविवरण 28– यीशु मसीह के आने (देखें यूहन्ना 5:46–47) और 70 ईसवीं में इस्राएल के उलटे जाने के विषय में कहे गये, परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता मूसा, के वचन, सच हुए।

प्रेरितों के काम की पुस्तक

रविवार	प्रेरितों के काम 1
सोमवार	प्रेरितों के काम 2
मंगलवार	प्रेरितों के काम 3
बुद्धवार	प्रेरितों के काम 4
बृहस्पतिवार	प्रेरितों के काम 5
शुक्रवार	प्रेरितों के काम 6
शनिवार	प्रेरितों के काम 7

■ प्रेरितों के काम की पुस्तक लूका के द्वारा लिखी गयी (प्रेरितों 1:1) और इसके साथ ही उसके सुसमाचार का लेखा जारी रहा।

■ इसको 'यीशु और उसके प्रेरितों के काम' कहना भी उचित है।देखें पद 1–'वह सब जो यीशु ने किया और सिखाया'

■ मसीह की मृत्यु पर विजय, अब इस्राएल में प्रेरितों के समूह के द्वारा, सामरिया और सब जगह कार्य कर रही थी। (प्रेरितों के काम 1:8)

■ पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं पर आधारित यह विषय जारी है:

1) पृथ्वी पर आने वाला राज्य।

2) एक उद्धारकर्ता और राजा के रूप में यीशु के कार्य।

3) यीशु का पुर्नरूत्थान, उसके अनुयायियों के पुर्नरूत्थान और परमेश्वर के राज्य का आश्वासन था।

■ मनुष्य के लिए मनफिराना, सुसमाचार पर विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – प्रेरितों के काम 1 –पुस्तक के शुरू में ही की गयी प्रतिज्ञा पर ध्यान दीजिये, कि, यीशु पृथ्वी पर वापिस आयेंगे। (पद 11)

सोमवार – प्रेरितों के काम 2 –पतरस, जिसने यीशु का तीन बार इन्कार किया था वह अब येरूशलेम में निडर गवाह हो गया। मनफिराव (मुड़ना, पुनः सोचना), विश्वास और बपतिस्मा अति आवश्यक है। (पद 38,41)

मंगलवार – प्रेरितों के काम 3 – यीशु, परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए पुनः आयेंगे, जैसा कि परमेश्वर के पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने और स्वंय यीशु मसीह ने भी बताया। (पद 20–21)

बुद्धवार – प्रेरितों के काम 4 – क्या दावा है! (पद 12) केवल मसीह और उसकी शिक्षायें ही उद्धार दे सकती है। कोई दूसरा 'धर्म' उद्धार नही दे सकता है।

बृहस्पतिवार – प्रेरितों के काम 5 – यीशु के पुर्नरूत्थान के गवाहों (पद 30) और उसके उद्धारकर्ता और राजा, (पद 31) दोनों होने की घोषणा पर ध्यान दीजिये।

शुक्रवार – प्रेरितों के काम 6– पुर्नरूत्थान के बहुत ही अधिक पक्के प्रमाण थे। यहां तक कि बहुत से यहूदी याजकों ने भी विश्वास किया। (पद 7)

शनिवार – प्रेरितों के काम 7 – एक विश्वासी की मृत्यु, मसीह की गवाही दे रही है। स्तुफनुस ने दिखाया कि किस प्रकार इस्राएल राष्ट्र ने हमेशा परमेश्वर को अस्वीकार किया और अब उसके पुत्र को अस्वीकार किया। (पद 52) तरसुस का शाऊल हत्या के समर्थन में था। (प्रेरितों के काम 8:1)

चरण **5** सप्ताह 24

रविवार	यहोशू 1
सोमवार	यहोशू 2
मंगलवार	यहोशू 3
बुद्धवार	यहोशू 4
बृहस्पतिवार	यहोशू 6
शुक्रवार	यहोशू 20
शनिवार	यहोशू 24

कनान की विजय

■ यहोशू के समय में, प्रतिज्ञा की गयी भूमि (कनान), में एमोरी और कनानी बसें हुए थे, जो मूर्तिपूजक और एक गन्दा जीवन जीने वाले थे। उनको दण्ड देने से पहले परमेश्वर ने बहुत लम्बे समय तक प्रतिक्षा की। (उत्पत्ति 15:16)

■ क्योंकि परमेश्वर इस्राएल के साथ था इसलिए उन्होंने, इन लोगों पर विजय प्राप्त की। उस भूमि में बसने से पहले इस्राएलियों को इन लोगों का नाश करना था जिससे कि वे इनके पापों में न गिरे। इस भूमि पर, यहोशू के नेतृत्व में, एक चमत्कारी विजय हुयी।

■ लेकिन बाद में इस्राएल के अविश्वास और समझौते का परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर कें बहुत से शत्रु, केवल बाद में समस्या पैदा करने के लिए, उस भूमि में रह गये।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – यहोशू 1 – यहोशू (यीशु के समान ही) प्रतिदिन परमेश्वर के वचन में मनन करता था, यह उसके जीवन का अवश्यक हिस्सा था। (पद 8)

सोमवार – यहोशू 2– पद 8–11। राहाब का परमेश्वर के लोगों को स्वीकार करना, उसके विश्वास का प्रमाण था। देखें इब्रानियों 11:31। 40 वर्ष पुरानी इस्राएल की प्रतिष्ठा पर ध्यान दीजिये। (पद 10)

मंगलवार – यहोशू 3 – वाचा का सन्दूक आगे चला। (पद 11) परमेश्वर ने इस्राएल के राज्य के मार्ग का नेतृत्व किया –जैसे यीशु हमारे लिए करता है।

बुद्धवार – यहोशू 4– इस्राएल ने प्रतिज्ञा की गयी भूमि में प्रवेश करने के लिए यरदन नदी को पार किया; अब्राहम से की गयी प्रतिज्ञायें फलनी–फूलनी शुरू हुयी। वर्षो के बाद वे यीशु मसीह में निश्चित हुयी।

बृहस्पतिवार – यहोशू 6 – यरीहो की दीवार गिर गयी और इसके खण्डहर आज प्रसिद्ध है। राहाब के विश्वास को भूलाया नही गया और उसको बचाने की प्रतिज्ञा पूरी हुयी।

शुक्रवार – यहोशू 20– यीशु हमारा 'शरणस्थान' है जिसमें हमें, पाप और मृत्यु से बचने के लिए, विश्वास और बपतिस्में के द्वारा, प्रवेश करना चाहिये।

शनिवार – यहोशू 24– परमेश्वर की हमें बचाने की तैयारी, जैसे उसने इस्राएल के साथ की, (पद 1–13) उसके प्रति हमें प्रतिउत्तर देना चाहिये।(पद 14, 24)

सुसमाचार का विस्तार

रविवार	प्रेरितों के काम 8
सोमवार	प्रेरितों के काम 9
मंगलवार	प्रेरितों के काम 10
बुद्धवार	प्रेरितों के काम 11
बृहस्पतिवार	प्रेरितों के काम 12
शुक्रवार	प्रेरितों के काम 13
शनिवार	प्रेरितों के काम 14

■ यीशु के सार्वजनिक कार्य, यरदन नदी में उनके बपतिस्में के बाद प्रारम्भ हुऐ, वही यरदन नदी जिसको यहोशू और इस्राएल ने पार किया था। यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले अपने सम्पूर्ण देश में यात्राऐं की, और परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया। (लूका 8:1)

■ स्वार्गारोहण के बाद, यीशु ने अपने प्रेरितों के द्वारा सुसमाचार को, येरूशलेम के बाहर, फैलाने का काम जारी रखा।

■ सुसमाचार सबसे पहले यहूदियों को, फिर सामरियों को, फिर यहूदा में बदले हुओ को (प्रेरितों के काम 8:27 में वर्णित कूशी के समान), सुनाया गया। उसके बाद अन्यजातियों (गैर–यहूदियों) को बुलाया गया। (प्रेरितों के काम 10)

प्रेरितों के समय का इस्राएल
का नक्शा

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – प्रेरितों के काम 8 –परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित बातों और बपतिस्में के द्वारा यीशु के नाम पर विश्वास के निरन्तर महत्व पर ध्यान दीजिये।(पद 12,37–38)

सोमवार – प्रेरितों के काम 9 –पौलुस ने भी विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। (पद 18) देखें प्रेरितों के काम 22:16। बपतिस्में के द्वारा उसके पाप क्षमा हुए।

मंगलवार – प्रेरितों के काम 10 – यहां तक कि कुरनेलियुस (पद 2) जैसे भले व्यक्ति को भी यह सीखना पड़ा कि उसको क्या करना चाहिये। (पद 6) उसने विश्वास किया (पद 42–43) और बपतिस्मा लिया।(पद 48)

बुद्धवार – प्रेरितों के काम 11 – अन्यजाति और यहूदी जीवन की प्रतिज्ञाओं के वारिस हो सकते है। (पद 18) सबसे पहले शब्द 'मसीही' पर ध्यान दीजिये। (पद 26)

बृहस्पतिवार – प्रेरितों के काम 12 – यद्यपि चेलों ने पतरस के जेल से छुटने के लिए प्रार्थना की (पद 5), लेकिन जब उनकी प्रार्थना का उत्तर मिला तो वे आश्चर्यचकित हुए।(पद 12–15)

शुक्रवार – प्रेरितों के काम 13– मसीह के मरने के बाद पुर्नरूत्थान की बात, (पद 30–37) भजनसंहिता 16:10 में, पहले से ही बता दी गयी थी। वह पुराने नियम की अन्य भविष्यवाणियों, जैसे 2शेमूएल 7:13, को भी पूरा करेगा। हम इससे जुड़ सकते है– देखें यशायाह 55:3।

शनिवार – प्रेरितों के काम 14 – हम साहस कर सकते है, क्योंकि विश्वास का द्वार अभी तक खुला है। (पद 27)

चरण **5** सप्ताह 26

रविवार	न्यायियों	4
सोमवार	न्यायियों	7
मंगलवार	न्यायियों	14
बुद्धवार	रूत	1
बृहस्पतिवार	रूत	2
शुक्रवार	रूत	3
शनिवार	रूत	4

न्यायियों की पुस्तक

■ न्यायियों ने यहोशू की मृत्यु से शेमूएल तक 400 वर्ष शासन किया, जिसके दौरान इस्राएल प्रायः परमेश्वर की सेवा के सही मार्ग को छोड़कर मूर्तिपूजा की ओर मुड़ गया। तब परमेश्वर ने उनको शत्रुओं के हाथ में कर दिया, यद्यपि उसने समय –समय पर उन्हें बचाने के लिए उनको न्यायी और अगुवें दिये। देखें न्यायियों 2:16–19

■ दबोरा और बाराक, गिदोन और शिमशोन, जैसे न्यायियों का विश्वास महान था। उनके नाम उस सूचि में शामिल थे जिनका विश्वास विशेष था।(इब्रानियों 11)

रूत की कहानी

■ न्यायियों के समय में ही रूत, जो एक मोआबी स्त्री थी, उसकी सुन्दर कहानी मिलती है।

■ उसका विवाह इस्राएल में हुआ, वह बेतलहम में, यहूदा गोत्र के बोआज की पत्नी हुयी। उनके पुत्र के परिवार से ही अन्त में उद्धारकर्ता हुआ।

बोआज = रूत
ओबेद
यिशै
दाऊद
मसीह

देखें रूत 4:18–22

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार –न्यायियों 4 – दबोरा और बाराक की निर्णायक विजय ने इस्राएल को अत्याचार से बचाया और बाद में मसीह की पाप के ऊपर विजय के दृश्य के रूप में प्रयोग हुआ। देखें न्यायियों 5:12, भजनसंहिता 68:18, इफिसियों 4:8।

सोमवार – न्यायियों 7– परमेश्वर को किसी सेना की आवश्यकता नही थी– केवल विश्वासी लोग जो युद्ध के लिए तैयार हो।(पद 1–8)

मंगलवार – न्यायियों 14 – पद 5–6। शिमशोन की सामर्थ परमेश्वर की ओर से थी। दाऊद की लड़ाई (1शेमूएल 17:34–36) और पौलुस के बचाव (2तिमुथियुस 4:17) को देखें।

बुद्धवार – रूत 1– रूत मोआब से आयी एक अजनबी थी। लेकिन उसने इस्राएल के परमेश्वर को चुना (पद 16) और परमेश्वर ने उसको आशीष दी। (रूत 4:13)

बृहस्पतिवार – रूत 2 – पद 11। रूत ने अपने लोगों को छोड़ दिया (अब्राहम के समान) और इस्राएल के परमेश्वर के पखों के नीचे शरण ली। (पद 12)

शुक्रवार – रूत 3– बोआज, जो अपने कार्यो से मसीह की ओर संकेत करता है, उसने अपने आपको आदरणीय और एक सच्चा कुटुम्बी सिद्ध किया –एक उद्धारकर्ता । (पद 13)

शनिवार – रूत 4– इस प्रकार रूत को खरीदा गया (पद 10) ठीक उसी प्रकार जैसे यीशु ने कलिसिया को अपनी दुल्हन होने के लिए खरीदा।

परिचय 6 चरण

इस छठें चरण में आप शेष बचे हुए वर्ष को सम्पूर्ण करेंगे... 26 सप्ताह

■ परमेश्वर की इच्छा से (हमें हमेशा इसी प्रकार कहना चाहिये देखें याकूब 4:15) – आप पहले से रखी गयी नींव पर अपना आत्मिक भवन बनाने के योग्य होंगे और आप देखेंगे कि किस प्रकार परमेश्वर के वचन की सब बातें एक दूसरे से मेल खाते हुए फिट होती है।

पढ़ते रहे!

■ बाईबिल को पढ़ना आसान नही है। परमेश्वर कहता हैः
"मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नही है...मेरे और तुम्हारे सोच विचारो में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।" (यशायाह 55:8–9)

■ यदि हम परमेश्वर के वचन को अपने मन और मस्तिष्क को प्रभावित करने की अनुमति देते है तो इससे हमें परमेश्वर के मार्गो को सीखने की एक जिज्ञासा मिलेगी।
"चखो और समझो कि यहोवा कितना भला है!"

परमेश्वर का वचन सामर्थशाली है

■ परमेश्वर ने अपना वचन हमें निर्देशित करने के लिए ताकि हम, अच्छे सिद्धान्तों को सीखें, बुरे विचारों को छोड़ दे, और अपने मस्तिष्क में अच्छी बातों को रखें, और हम अपने आप को उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकें। (2तिमुथियुस 3:15–16)

■ यह प्रक्रिया स्थिर है लेकिन निश्चित है। यह हमारी वर्तमान खुशी के लिए और भविष्य के लिए अच्छी है। हमारा अनन्त जीवन इस बात पर निर्भर है कि हम परमेश्वर के वचन में दिये गये उसके मार्गो को स्वीकार करते है या नही। (प्रेरितों के काम 20:32)

■ प्रतिदिन नियमित रूप से, ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक बाईबल को पढ़ना याद रखें।

पौलुस द्वारा घूमे गये स्थान (प्रेरितों के काम 13–21)

रविवार	प्रेरितों के काम 15
सोमवार	प्रेरितों के काम 16
मंगलवार	प्रेरितों के काम 17
बुद्धवार	प्रेरितों के काम 18
बृहस्पतिवार	प्रेरितों के काम 19
शुक्रवार	प्रेरितों के काम 20
शनिवार	प्रेरितों के काम 21

पौलुस की यात्राऐं

■ यीशु और उसके प्रेरितों के कामों की कहानी को हम जारी रखेंगे।

■ प्रेरित पौलुस ने प्राय अपने को खतरे में डालकर बहुत बड़ी–बड़ी मिशनरी यात्राऐं की। मसीह ने उसको विशेष रूप से अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने के लिए नियुक्त किया, लेकिन, इसके साथ–साथ ही उसने प्राय यहूदी अराधनालयों को भी सम्बोधित किया।

■ रोमी सम्रज्य की अच्छी सड़कों और सार्वजनिक विस्तृत भाषा की पृष्ठभूमि में सुसमाचार तेजी से फैला। यह कोई दुर्घटना नही थी। परमेश्वर ने रोमी सम्राज्य के संचार के अच्छे तरीके को अपना वचन फैलाने के लिए प्रयोग किया।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – प्रेरितों के काम 15 – पद 14–15। इस अध्याय की घटनायें सुसमाचार की सफलता के लिए संकटकालीन थी। अन्यजातियों की बुलाहट, पुराने नियम में पहले से बता दी गयी थी। (उदाहरण के लिए अमोस 9:11–12 देखें)

सोमवार – प्रेरितों के काम 16– जो उद्धार (पद 30) चाहते है उनके लिए विश्वास (पद 31) और बपतिस्में (पद 33) के महत्व को फिर से बताया गया है।

मंगलवार – प्रेरितों के काम 17 – यीशु का पुर्नरूत्थान, परमेश्वर की इस बात की गारण्टी है कि वह जगत का न्याय करने के लिए उसको भेजेगा। (पद 31)

बुद्धवार – प्रेरितों के काम 18– यहूदियों ने मसीहा = मसीह = परमेश्वर का अभिषिक्त भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा की प्रतिक्षा की।यीशु ही मसीह है।(पद 28)

बृहस्पतिवार – प्रेरितों के काम 19 – बिना सोचे समझे भीड़ के साथ जाना आसान होता है। पद 32 देखें। लेकिन मसीह, अरतिमिस या कोई भी दूसरी चीज जिसकी मनुष्य अराधना करता है, उस सब से महान है।

शुक्रवार – प्रेरितों के काम 20– चेलों के बीच के स्नेह पर ध्यान दीजिये। (पद 1, 31, 36–38)

शनिवार – प्रेरितों के काम 21– दूसरे विश्वासियों के साथ संगती, मसीह जीवन की बड़ी आशीषों में से एक है।(पद 4,5,7,8,16,17) ऐसा करने से हम एक दूसरे की देखभाल कर सकते है और एक दूसरे के आनन्द और समस्याओं में सहभागी हो सकते है।

इस्राएल की दूसरे राजा की चाहत

रविवार	1शेमूएल 1
सोमवार	1शेमूएल 2
मंगलवार	1शेमूएल 3
बुद्धवार	1शेमूएल 8
बृहस्पतिवार	1शेमूएल 9
शुक्रवार	1शेमूएल10
शनिवार	1शेमूएल15

■ शेमूएल की पुस्तक, राज्य प्रारम्भ होने तक इस्राएल के इतिहास को जारी रखती है। शेमूएल आखरी न्यायी था और इस्राएल ने अपने लिए एक राजा की मांग की, जैसा कि उनके चारों ओर के देशों के पास थे।

■ लेकिन इस्राएल भूल गया कि परमेश्वर उनका राजा था। शेमूएल को अस्वीकार करके उन्होंने परमेश्वर को अस्वीकार किया। राजा के रूप में शाऊल उनको दिया गया लेकिन उसने परमेश्वर की आज्ञा को नही माना (1शेमूएल 15) और अन्त में परमेश्वर को उसको अस्वीकार करना पड़ा।

■ कहानी शेमूएल के जन्म और उसकी सेवा से शुरू होती है। इस समय पलिश्तिन, इस्राएल का प्रमुख शत्रु था। वाचा के सन्दूक पर उन्होंने कब्जा कर लिया, (1शेमूएल 4)यद्यपि इसके कारण उनको समस्या हुयी।(1शेमूएल 5)

■ शेमूएल के नेतृत्व में जब इस्राएल परमेश्वर की अराधना (1शेमूएल 7) करने वापिस आया तो उनको हराया गया।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 1शेमूएल 1 –'मन्दिर' (पद 9) एक तम्बू था जिसको शीलो में खड़ा किया गया। इस्राएल अवनति की ओर चल दिया, और उसके याजक स्वार्थी और लालची हो गये।

सोमवार – 1शेमूएल 2 –पद 1–10 की तुलना लूका 1:46–65 में दिये मरियम के शब्दों से कीजिये। हन्ना की विश्वास से की गयी प्रार्थना का उत्तर मिला और वह प्रसन्न हुयी। प्रतिज्ञा के अनुसार शेमूएल को परमेश्वर की सेवा करने के लिए वापिस मन्दिर में दे दिया गया।

मंगलवार – 1शेमूएल 3 – पद 4। परमेश्वर ने शेमूएल को बुलाया और बूढे व्यक्ति एली ने उसको बताया कि किस प्रकार उत्तर देना था। परमेश्वर अपने कार्यो के द्वारा बोलता है, हमें भी सुनना चाहिये।

बुद्धवार – 1शेमूएल 8 – परमेश्वर, इस्राएल का न्यायी और राजा था, जिसको उन्होंने अस्वीकार कर दिया। (पद 7) उस समय इस्राएल परमेश्वर का राज्य था लेकिन इसकी प्रसन्नसा नही हुयी।

बृहस्पतिवार – 1शेमूएल 9 – शाऊल एक ऊंची कदकाठी का व्यक्ति था लेकिन परमेश्वर के राज्य के लिए पर्याप्त आत्मिक नही था, जैसा कि अध्याय 15 दिखाता है।

शुक्रवार – 1शेमूएल 10– ध्यान दीजिये कि किस प्रकार परमेश्वर ने शाऊल की सहायता की (पद 6, 9, 26) परमेश्वर चाहता था कि शाऊल उस पर भरोसा रखे और एक सफल राजा हो।

शनिवार – 1शेमूएल 15 – शाऊल परमेश्वर को प्राथमिकता देने में असफल हुआ और उसने परमेश्वर के निर्देशों को पूर्णतया पालन नही किया। यद्यपि बलिदान की आज्ञा दी गयी थी, लेकिन यह आज्ञाकारिता का केवल एक साधन था। आज्ञाकारिता कही अधिक महत्वपूर्ण थी। (पद 22–23)

रविवार	प्रेरितों के काम 22
सोमवार	प्रेरितों के काम 23
मंगलवार	प्रेरितों के काम 24
बुद्धवार	प्रेरितों के काम 25
बृहस्पतिवार	प्रेरितों के काम 26
शुक्रवार	प्रेरितों के काम 27
शनिवार	प्रेरितों के काम 28

मसीही पंथ

■ प्रेरित पौलुस के जीवन के अनुभव, उसका येरूशलेम को जाना और मृत्यु की सम्भावना, रोमियों और यहूदियों के सम्मुख उसके बहुत से मुकदमें, ठीक वैसे ही है जैसे उसके प्रिय गुरू यीशु के साथ हुआ। (देखें पृष्ठ 25)

■ बाद में उसे एक बन्दी के रूप में समुद्री यात्रा द्वारा, रोमी शासक, नीरो के सामने मुकदमें के लिए जाना पड़ा। उसकी यात्राओं के द्वारा सुसमाचार बहुत अधिक फैला। कई पत्र जो उसने रोम से लिखे वे नये नियम का हिस्सा है।

पौलुस की रोम यात्रा

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – प्रेरितों के काम 22 – मसीहत को एक पंथ कहा गया था। (पद 4)। देखें प्रेरितों के काम 9:2; 19:9, 23 आदि। यीशु परमेश्वर तक पहुचंने का मार्ग है। (यूहन्ना 14:6)

सोमवार – प्रेरितों के काम 23 – परमेश्वर ने पौलुस की सुरक्षा के लिए और सुसमाचार को फैलाने के लिए, रोमी सेना को भी प्रयोग किया। (पद 23–24)

मंगलवार – प्रेरितों के काम 24 – पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं (पद 14) और पुर्नरूत्थान (पद 15) में विश्वास करना ही इस पंथ में निहित है।

बुद्धवार – प्रेरितों के काम 25– पौलुस के जीवन के अनुभव और यीशु के, येरूशलेम में हुए मुकदमें, एक समान थे। (पद 2,6)

बृहस्पतिवार – प्रेरितों के काम 26 – पद 18 में सुसमाचार का सारांश है। पौलुस के सामर्थशाली प्रचार का राजा अग्रिप्पा पर नाटकीय प्रभाव हुआ। (पद 28)

शुक्रवार – प्रेरितों के काम 27– 'हिम्मत बांधना' (पद 22) एक आशावादी 'खुशी' से कही अधिक है। यह हमें याद दिलाता है कि जब हम परमेश्वर पर भरोसा रखते है तो हमारे पास आशा और उत्साह रखने की सब वजहें है।

शनिवार – प्रेरितों के काम 28– एक सैनिक के लिए, जो एक यात्री प्रचारक था, जंजीरों में बंधना बहुत ही कठिन रहा होगा, लेकिन यह परमेश्वर की इच्छा थी। इसी बन्धुआई से उसके द्वारा नये नियम के बहुत से पत्र लिखे गये थे।

परमेश्वर का एक राजा का चुनाव

रविवार	1शेमूएल 16
सोमवार	1शेमूएल 17
मंगलवार	2शेमूएल 1
बुद्धवार	2शेमूएल 2
बृहस्पतिवार	2शेमूएल 5
शुक्रवार	2शेमूएल 7
शनिवार	2शेमूएल 24

■ परमेश्वर ने शाऊल को अस्वीकार कर दिया (1शेमूएल 15:22–23)और शेमूएल को भेजा कि वह यिशै के पुत्र और रूत के वंशज, दाऊद का राजा होने के लिए अभिषेक करें। (1शेमूएल 16)

■ दाऊद का अर्थ है 'प्रिय'। परमेश्वर ने उससे प्रेम किया क्योंकि उसका हृदय उचित था। (प्रेरितों के काम 13:22)

■ दाऊद को राजा होने के लिए प्रतिक्षा करनी पड़ी। शाऊल ने 40 वर्षो तक राज्य किया और वह दाऊद से इतनी अधिक जलन रखता था कि वह उसकी हत्या करने के लिए उसको खोजता रहा।

परमेश्वर का आने वाला राजा

■ इस्राएल के इतिहास में दाऊद सबसे अच्छा राजा था।

■ यहोवा ने उससे एक ऐसे पुरूष के रूप में प्रेम किया 'जो उसके मन के अनुसार था।'

■ परमेश्वर ने मसीहा के विषय में उससे प्रतिज्ञा की।

■ यीशु दाऊद का पुत्र है। (2 शेमूएल 7:12–16 और मत्ती 1:1)

■ यीशु, येरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा।

1000 ईपू का इस्राएल का नक्शा

■ यीशु, परमेश्वर के द्वारा चुना गया, उसके राज्य का एक सिद्ध राजा है। देखें 2शेमूएल 23:3–4

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 1शेमूएल 16 –परमेश्वर का चुनाव मनुष्य के हृदय पर आधारित होता है। वह हमारे सब विचारों और उद्‌देश्यों को जानता है। उसके पुत्र, यीशु, के पास भी यही सामर्थ है। देखें यूहन्ना 2:24–25

सोमवार – 1शेमूएल 17 –दाऊद की विजय ठीक उसी प्रकार थी जिस प्रकार यीशु की पाप के ऊपर विजय। उत्पत्ति 3:15 की इब्रानियों 2:14–15 के साथ तुलना करें।

मंगलवार – 2शेमूएल 1 – अपने मित्र योनातन और शाऊल जो उससे घृणा करता था, इनके लिए दाऊद का विलाप, बाईबिल में दिये गये वास्तविक प्रेम का एक सबसे अच्छा उदाहरण है।

बुद्धवार – 2शेमूएल 2 – दाऊद सबसे पहले अपने गोत्र यहूदा के द्वारा स्वीकार किया गया और हेब्रोन का राजा बनाया गया।

बृहस्पतिवार – 2शेमूएल 5 – बाद में सम्पूर्ण इस्राएल ने दाऊद को स्वीकार किया और उसने येरूशलेम पर शासन किया।

शुक्रवार – 2शेमूएल 7– यह सीधे, परमेश्वर द्वारा अब्राहम से की गयी प्रतिज्ञाओं से सम्बन्धित है। दाऊद का सबसे महान पुत्र, यीशु, येरूशलेम में राज्य करेगा और परमेश्वर का घर बनायेगा। (पद 12–16)

शनिवार – 2शेमूएल 24 – पद 16। स्वर्गदूत येरूशलेम में रूका, जहां यीशु को बलिदान होना था और जहां बाद में मन्दिर बनना था। (2इतिहास 3:1)

चरण **6** सप्ताह 31

रविवार	रोमियों 5
सोमवार	रोमियों 6
मंगलवार	रोमियों 8
बुद्धवार	रोमियों 9
बृहस्पतिवार	रोमियों 10
शुक्रवार	रोमियों 12
शनिवार	रोमियों 13

पौलुस के पत्र

■ नये नियम की बहुत सी पुस्तकें पौलुस के द्वारा लिखे गये पत्र है, जो उसने संसार के विभिन्न भागों में रहने वाले विश्वासियों के समूह को या किसी विश्वासी व्यक्ति को लिखें है।

■ कुछ उस समय लिखें गये जब पौलुस अपनी मिशनरी यात्रा कर रहा था जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णित है।

रोमियों के नाम पत्र

■ यह पत्र पौलुस की तीसरी यात्रा के दौरान लिखा गया। देखें प्रेरितों के काम 19:21 और रोमियों 15:25–26

■ रोमि की 'कलिसिया' में यहूदी और अन्यजाति दोनों तरह के विश्वासी थे। पौलुस उनको बताता है कि आदम की सन्तान होने के कारण, पाप और मृत्यु इस जगत में आयी तो इसलिए उन सब को उद्धार की आवश्यकता थी।

■ वह मसीह में परमेश्वर की दया और करूणा की प्रसन्नसा करता है जिसके द्वारा हम सब के लिए उद्धार का अवसर मिला।

■ हम सब 'आदम में' पैदा होते है और हम सब को विश्वास और मसीह में बपतिस्में के द्वारा, उद्धार की आवश्यकता है। (रोमियों 6)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – रोमियों 5 – आदम के वंशज होने के नाते हम सब स्वाभाविक रूप से पापी है। (पद 12) धार्मिकता और अनन्त जीवन केवल मसीह के द्वारा ही दी गयी है। (पद 19, 21)

सोमवार – रोमियों 6 – बपतिस्में में 'पुराना मनुष्य' (आदम से संबद्ध) दफनाया जाता है और 'नया मनुष्य' (मसीह से संबद्ध) पैदा होता है। (पद 4)

मंगलवार – रोमियों 8 – पद 8। जो 'देह में' (आदम में) है वे परमेश्वर को प्रसन्न नही कर सकते है। लेकिन यदि हम मसीह का अनुसरण करते है तो हम उसके बलिदान और प्रेम के द्वारा बचाये जायेंगे। (पद 28,38–39)

बुद्धवार – रोमियों 9 – हम अपने कामों के द्वारा धार्मिकता को प्राप्त नही कर सकते है, बल्कि मसीह में विश्वास के द्वारा ही हम ऐसा कर सकते है। (पद 30–32) यह एक उपहार है, एक अधिकार नहीं।

बृहस्पतिवार – रोमियों 10 – मसीह में विश्वास, परमेश्वर का वचन सुनने से आता है। (पद 13–17) हमें विश्वास करना चाहिये कि यीशु मर गये और फिर जी उठें, और यह कि वह प्रभु है। (पद 9)

शुक्रवार – रोमियों 12– परमेश्वर जीवित सेवा चाहता है, न कि मृत बलिदान। (पद 1)

शनिवार – रोमियों 13– संसार का शासन परमेश्वर के द्वारा स्थापित किया गया। (पद 1, की तुलना दानिय्येल 4:17,25,32 से करें) समय बहुमूल्य है। (पद 11) हमें मसीह को धारण करने की आवश्यकता है।(पद 14)

इस्राएल और यहूदा के राजा

रविवार	1राजा 3
सोमवार	1राजा 5
मंगलवार	1राजा 12
बुद्धवार	1राजा 17
बृहस्पतिवार	1राजा 18
शुक्रवार	2राजा 5
शनिवार	2इतिहास 36

■ परमेश्वर ने दाऊद के बाद, परमेश्वर के राज्य पर राजा होने के लिए, सुलैमान को चुना। उसकी बुद्धि और धन सम्पत्ति विश्वप्रसिद्ध थी। उसने येरूशलेम में पहला मन्दिर बनाया।

■ उसके दिनों में बहुत ही शान्ति थी, लेकिन उसके जीवित रहते ही समस्याओं का बीज बो चुका था और उसके मरते ही राज्य बंट गया। (1राजा 12)

दो राज्य

इस्राएल
(दस गोत्र)
बुरे राजा
यारोबाम 1—975 ईपू
से
होशे
दस गोत्र बन्धक बनाकर
अश्शूर ले जाये गये, 721 ईपूं

यहूदा
(दो गोत्र)
बुरे (कुछ अच्छे) राजा
रहूबियाम, 975 ईपू
से
सिदिकिय्याह, 599 ईपू
दो गोत्रों को बाबुल में बन्धक
बनाकर ले जाया गया, 588 ईपू

राजाओं के दिनों में इस्राएल और यहूदा

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार — 1राजा 3 —सुलैमान ने उचित चीज मांगी। (पद 9) देखें नीतिवचन 4:7, आदि।

सोमवार — 1राजा 5 —अन्यजातियों और यहूदियों ने एक साथ मन्दिर बनाया। इसलिए मसीह में दोनों ही, अन्यजाति और यहूदी, परमेश्वर के द्वारा स्वीकार्य है।

मंगलवार — 1राजा 12 —सुलैमान का पाप (1राजा 11:1—3) और रहूबियाम की बुद्धि की कमी,(पद 11) दोनों ही का परिणाम राज्य का विभाजन हुआ।

बुद्धवार — 1राजा 17 — एलिय्याह को परमेश्वर ने वापिस इस्राएल भेजा कि वह उनको परमेश्वर की ओर मोड़ सकें। एलिय्याह ने यह बात साबित करने के लिए कि वह परमेश्वर की ओर से आया है, चमत्कार दिखाये। (पद 24)

बृहस्पतिवार — 1राजा 18 — मूर्ति पूजा की शुरूआत सुलैमान ने की और फिर यारोबाम,(1राजा12:28—30) एलिय्याह की प्रार्थना (पद 36) और उसके कार्यो (पद 40) के कारण अस्थाई रूप से रूकी रही।

शुक्रवार — 2राजा 5— यद्यपि इस्राएल बलवई था, लेकिन नामान, जो कि एक अरामी था उसने आज्ञा को माना और वह ठीक हो गया। देखें लूका 4:25—27

शनिवार — 2इतिहास 36 — परमेश्वर ने अपने लोगों के पास अपने दूतों और भविष्यद्वक्ताओं (पद 15) को भेजा। लेकिन तौभी वे बलवई ही रहे। दण्ड स्वरूप वे 70 वर्षो के लिए बाबुल की बन्धुआई में चले गये। (पद 17—21)

रविवार	1कुरिन्थियों	1
सोमवार	1कुरिन्थियों	2
मंगलवार	1कुरिन्थियों	3
बुद्धवार	1कुरिन्थियों	10
बृहस्पतिवार	1कुरिन्थियों	11
शुक्रवार	1कुरिन्थियों	13
शनिवार	1कुरिन्थियों	15

कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र

■ प्रेरित पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान यूनान के कुरिन्थुस को गया। (प्रेरितों के काम 18:1–11)

■ बाद में, जब वह अपनी तीसरी यात्रा के दौरान इफिसुस में था (प्रेरितों के काम 19) तो उसने कुरिन्थुस के भाईयों और बहनों को पत्र लिखा। उनमें अलगाव और झगड़ा पैदा हो गया था और आचरण और विश्वास के कुछ प्रथम सिद्धान्तों की गम्भीर अवहेलना की जा रही थी।

■ पौलुस ने 'यीशु मसीह और उसकी क्रूस पर मृत्यु' (1कुरिन्थियों 2:2) पर आधारित सुसमाचार की एकता पर जोर दिया। उस मसीहा का सुसमाचार जिसको क्रूस पर चढाया गया, यहूदियों के लिए ठोकर (अविचारणीय) का कारण था। यह यूनानियों (अन्यजातियों) के लिए मूर्खता था। उद्धार का केवल यही एक मार्ग था। (1कुरिन्थियों 1:23)

■ इस पत्री का अद्‌भुत विषय यही है कि 'मसीह में' होना और उसको कलिसिया के सिर के रूप में याद करना, क्योंकि इसके बिना हमारी और कोई आशा नही है। मसीह मृतकों में से जी उठा और उसी के कारण हमारा विश्वास जीवित है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 1कुरिन्थियों 1 – पद 26–32। मसीह में विनम्र विश्वास, सब संसारिक ज्ञान से अच्छा है। (यिर्मयाह 9:23–24)

सोमवार – 1कुरिन्थियों 2 –जिनका ज्ञान बाईबिल पर आधारित होता है, परमेश्वर उनके लिए बहुत सी प्रतिज्ञायें करता है। (पद 9–10) और इस प्रकार हमारा मन मसीह की ओर हो जाता है और जैसा वह था उसी के अनुसार सोचना आरम्भ कर देते है।(पद 16)

मंगलवार – 1कुरिन्थियों 3 – पद 18–20। जो परमेश्वर पर भरोसा रखते है उन्हें सबकुछ मिलता है; लेकिन अधर्मियों के ज्ञान और चरित्र से सावधान रहो। (पद 17)

बुद्धवार – 1कुरिन्थियों 10 – पद 1–12। विनम्रता की यह मांग है कि हम इस बात को समझे कि हम भी असफल हो सकते है, जिस प्रकार इस्राएल मरूस्थल की यात्रा के दौरान असफल हुआ। परमेश्वर प्रलोभनो में भी दया दिखाता है। (पद 13) परमेश्वर विजय प्राप्त करने में हमारी सहायता करता है, लेकिन तभी यदि हम प्रार्थनाओं में उससे सहायता मांगते है।

बृहस्पतिवार – 1कुरिन्थियों 11 – पद 23–26। मसीह की याद में प्रभु भोज का प्रावधान यीशु के द्वारा ही ठहराया गया, जब तक कि वह 'वापिस न आये' (पद 26) उसके शिष्यों को, उसके बलिदान को याद करने के लिए और पापों से अपने छुटकारें को याद करने के लिए, यह करना चाहिये।

शुक्रवार – 1कुरिन्थियों 13 – यह बाईबिल के सबसे प्यारे अध्यायों में से एक है। पुराने अनुवादों में आये शब्द 'दान पुण्य' (चेरिटी) को आधुनिक अनुवादों 'प्रेम' करके अनुवादित किया गया है। मसीह के द्वारा प्रदर्शित, दिव्य प्रेम का पालन करने वाला गुण, हममें भी प्रगट होना चाहिये।

शनिवार – 1कुरिन्थियों 15– मसीह की मृत्यु और पुर्नरूत्थान के विषय में, पुराने नियम में पहले से ही बता दिया गया था। (पद 3–4 और लूका 24:25–27, 44) जो मसीह में है वे उसके पुनः आगमन पर मृतकों में से जिलाये जायेंगे। देखें पद 22–23।

भजनसंहिता की पुस्तक

रविवार	भजनसंहिता 1
सोमवार	भजनसंहिता 2
मंगलवार	भजनसंहिता 6
बुद्धवार	भजनसंहिता 16
बृहस्पतिवार	भजनसंहिता 19
शुक्रवार	भजनसंहिता 22
शनिवार	भजनसंहिता 23

■ परमेश्वर के वचन के केन्द्र में भजनसंहिता है।

■ भजनसंहिता, प्रार्थना और अराधना से सम्बन्धित है। (देखें पृष्ठ 23) यद्यपि बीते समय के व्यक्तिगत अनुभवों को प्रगट किया गया है, लेकिन तौभी इसके अधिकांश सन्देश असमय है।

■ आप निम्न भावों को इसमें पा सकते हैः
विनम्रता, प्रसन्नसा, अंगीकार, हृदय को उडेलना और इस्राएल की आशा के पुनःकथन और परमेश्वर की प्रतिज्ञायें।

■ यहां से प्रभु यीशु मसीह ने सांत्वना और सामर्थ प्राप्त की, जैसे की उन्होंने सभी शास्त्रों से किया।
कुछ भजन मूसा, सुलैमान, हिजिकिय्याह या किसी अन्य के द्वारा लिखें हो सकते है लेकिन अधिकांश दाऊद के भजन है। इन सब भजनों का विषय इस बात को प्रमाणित करता है कि यह सब परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है।

■ बहुत से भजन 'मुक्तिदाता' से सम्बन्धित है, अर्थात, मसीहा की ओर संकेत करते है– उसका सताव और मृत्यु, उसका पुर्नरूत्थान, आने वाले राज्य में उसकी महिमा के लिए उसका दिव्य पुत्रत्व।

■ नये नियम में भजनसंहिता के बहुत से सन्दर्भ मिलते है।

■ प्रत्येक समय और परिस्थिति के लिए भजन इसमें मिलते है... चाहे आप दुखी हो या प्रसन्न हो, चाहे आप डरे हो या उमंग में हो।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – भजनसंहिता 1 –मसीह भी परमेश्वर के वचन से आनन्दित था। वह दिन और रात इसमें मनन करता था। (पद 2)

सोमवार – भजनसंहिता 2 –मसीह परमेश्वर का पुत्र (पद 5) था, एक अभिषिक्त राजा जो सिय्योन से (पद 6) पूरी पृथ्वी (पद 8) पर राज्य करेगा। (प्रेरितों के काम 4:25; 13:33 और इब्रानियों 1:5; 5:5)

मंगलवार – भजनसंहिता 6 – मृत्यु एक शत्रु है। (पद 5) छुटकारा केवल उनके लिए है जो मसीह पर विश्वास करते है। (यूहन्ना 3:16)

बुद्धवार – भजनसंहिता 16 – स्वंय मसीह के लिए भी मृत्यु से छुटकारें की प्रतिज्ञा की गयी थी। (पद 8–11) (प्रेरितों के काम 2:30–32; 13:35 में इसका सन्दर्भ दिया गया है)

बृहस्पतिवार – भजनसंहिता 19 – केवल परमेश्वर का वचन (पद 7–11) ही हमें यह बता सकता है कि हम वास्तव में क्या है (पद 12) और हमें वैसा बना सकता है जैसा हमें होना चाहिये। (पद 7–9)

शुक्रवार – भजनसंहिता 22– यीशु मसीह पापियों को बचाने आया (पद 5)। उसके सताये जाने के विषय में इस अध्याय में पहले से ही बता दिया गया है। (उदाहरण के लिए पद 16, 18 देखें)

शनिवार – भजनसंहिता 23 – परमेश्वर के समान ही, मसीह, हमें मृत्यु से बचाने के लिए (पद 4) हमारा चरवाहा हो सकता है, और हमें अनन्त जीवन पाने के लिए हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है। (पद 6)

रविवार	2कुरिन्थियों 11
सोमवार	गलातियों 1
मंगलवार	गलातियों 2
बुद्धवार	गलातियों 3
बृहस्पतिवार	गलातियों 4
शुक्रवार	गलातियों 5
शनिवार	गलातियों 6

सुसमाचार

■ सुसमाचार का अर्थ है 'शुभ समाचार' या 'खुशी की खबर'

■ यह परमेश्वर के राज्य और प्रभु यीशु मसीह, और इस विषय में है कि किस प्रकार मनुष्यों को बचाया जा सकता है।

■ केवल एक ही सुसमाचार है जो बदल नही सकता है। (यहूदा 1:3)

गलातियों के नाम पत्र

■ कुछ निश्चित यहूदियों ने, गलातियों के विश्वासियों को एक सुसमाचार से भटकाने का प्रयास किया और उनको पुरानी व्यवस्था की रीतियों को मानने के लिए भी बाधित किया। इसलिए पौलुस ने उनको लिखा।

■ सुसमाचार यह है कि यीशु प्रतिज्ञा किया हुआ स्त्री का (उत्पत्ति 3:15; गलातियों 4:4) और अब्राहम का (उत्पत्ति 12:3; गलातियों 3:16) वंश है और यहूदी या अन्यजाति विश्वास के द्वारा उन प्रतिज्ञाओं के वारिस हो सकते है, लेकिन तभी यदि वे मसीह में हो। (3:27)

गलातिया में 'कलिसियाऐं' (देखें प्रेरितों के काम 13–18)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 2कुरिन्थियों 11 – केवल एक ही सुसमाचार है (पद 3,4) जिसको बदलना नही चाहिये। ध्यान दीजिये कि किस प्रकार पौलुस उस सुसमाचार की रक्षा के लिए कष्टों को सहा।

सोमवार – गलातियों 1 –केवल एक ही सुसमाचार है (पद 6–9) जिसको बदलना नही चाहिये। इसी सुसमाचार पर हमें विश्वास करना चाहिये।

मंगलवार – गलातियों 2 – मसीह के अनुग्रह से पुरानी व्यवस्था बदल गयी। (पद 20–21)

बुद्धवार – गलातियों 3 – ध्यान दीजिये कि अब्राहम को सुसमाचार सुनाया गया। (पद 8) मसीह के नाम पर विश्वास करने और उसके नाम में बपतिस्मा लेने से हम प्रतिज्ञाओं के वारिस हो जाते है। (पद 29)

बृहस्पतिवार – गलातियों 4 – यदि हम इस पृथ्वी के वारिस होना चाहते है तो हमें परमेश्वर की सन्तान (पद 6) बनने और परमेश्वर के वचन की सन्तान (पद 28) बनने की आवश्यकता है।

शुक्रवार – गलातियों 5 – वे जो मसीह के है उन्हें अपनी बुरी इच्छाओं को मारना चाहिये। (पद 24)

शनिवार – गलातियों 6– यीशु मसीह के पुनः आगमन पर एक न्याय होगा। (पद 7–8)

रविवार	भजनसंहिता 32
सोमवार	भजनसंहिता 37
मंगलवार	भजनसंहिता 45
बुद्धवार	भजनसंहिता 46
बृहस्पतिवार	भजनसंहिता 48
शुक्रवार	भजनसंहिता 49
शनिवार	भजनसंहिता 51

भजनसंहिता में आत्मिक विषय

■ बाईबिल की अन्य पुस्तकों के समान ही भजनसंहिता में भी शिक्षाओं और सन्देश की एकरूपता देखने को मिलती है क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से आयी है।

■ सुसमाचार के कुछ विषय इसमें मिलते हैः

मसीह –

सताया जाता मसीहा
परमेश्वर का पुत्र
होने वाला राजा

परमेश्वर का राज्य –

पृथ्वी पर स्थापित होगा इस्राएल इसका केन्द्र बिन्दु और येरूशलेम इसका मुख्यालय होगा।

मृत्यु या जीवन –

पाप, दुख और मृत्यु की सच्चाई को रेखांकित किया गया है, उन के लिए, परमेश्वर की दया के द्वारा, जीवन की आशा निश्चित है जो उसकी क्षमा को खोजते है और उस पर भरोसा रखते है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – भजनसंहिता 32 –यदि हम समय रहते उसकी क्षमा को खोजेंगे (पद 6) तो परमेश्वर हमारे पापों को ढापने का प्रबन्ध करेगा (पद 1–2)। देखें उत्पत्ति 3:21; गलातियों 3:27; मत्ती 22:11

सोमवार – भजनसंहिता 37 –परमेश्वर पर विश्वास करने वाले नम्र लोग, मसीह के साथ सदा के लिए इस पृथ्वी के अधिकारी होंगे। (पद 11, 18, 22, 29, 34, 37)

मंगलवार – भजनसंहिता 45 – यह भजन राजा और उसकी दुल्हन का वर्णन करता है। यीशु राजा है, और राज्य के लोग दुल्हन को प्रदर्शित करते है।

बुद्धवार – भजनसंहिता 46 – परमेश्वर जब अपने राज्य को स्थापित करेगा तो वह सब जगह के (पद 9) लड़ाई झगड़ों को मिटा देगा। सब उसका आदर करेंगे। (पद 10)

बृहस्पतिवार – भजनसंहिता 48 – दुनिया की समस्याओं के समय के बाद (पद 6,8–9) सिय्योन (येरूशलेम), आने वाले राज्य की राजधानी होगी। (पद 2), (मत्ती 5:35),

शुक्रवार – भजनसंहिता 49– सुसमाचार के बिना मनुष्यों के पास कोई आशा नही है। मृत्यु जीवन का अन्त है। सच्चे विश्वासी लोग मृतकों में से जिलाये जायेंगे।

शनिवार – भजनसंहिता 51 – दाऊद इस भजन का मनफिराया हुआ पापी था, लेकिन यह हमें भी आशा दे सकता है। (पद 8–19) मनफिराव हृदय का होता है। (पद 6,10)

रविवार	इफिसियों 4
सोमवार	इफिसियों 5
मंगलवार	इफिसियों 6
बुद्धवार	फिलिप्पियों 1
बृहस्पतिवार	फिलिप्पियों 2
शुक्रवार	फिलिप्पियों 3
शनिवार	फिलिप्पियों 4

रोम से पौलुस के पत्र

■ प्रेरितों 27—28 में वर्णित, रोम की यात्रा के बाद, प्रेरित पौलुस ने उन भाईयों और बहनों को पत्र लिखें जिनसे वह अपनी पुरानी यात्राओं में मिला था। (पृष्ठ 33 पर दिये गये नक्शे को देखें)

इफिसियों को लिखी पत्री

■ यहां मसीह की देह के रूप में कलिसियां का अदभुत वर्णन हैं

■ वह विश्वासियों को मसीह में एक और उन्नत जीवन के लिए बुलाता है।

फिलिप्पियों को लिखी पत्री

■ यह भी हमारे आत्मिक उत्थान के लिए मसीह में एकता को बताता है। यह पत्र आनन्द से भरा है।

■ सैनिकों, हथियारों आदि के विषय में दिये गये पद बहुत ही रूचिकर है, क्योंकि फिलिपी, रोम की बाहरी चौकी थी, वैसे ही एक सच्ची कलिसियां को पृथ्वी पर स्वर्गीय मूल्यों को प्रकट करना चाहिये।(फिलिप्पियों 3:20)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार — इफिसियों 4 — जो एक ही विश्वास (पद4—6) और नया मनुष्यत्व (पद 22—24) रखते है वे एकसाथ 'मसीह की देह' हो जाते है। (पद 13—16)

सोमवार — इफिसियों 5 —मसीह देह(एक सच्ची कलिसिया) का सिर है (पद 23) और वह स्वर्गीय दूल्हा (पद 25—27) है। एक अच्छे विवाह के सि़द्धान्तों पर ध्यान दीजिये। (पद 22—29)

मंगलवार — इफिसियों 6 — सब तरह के लोग चेलें बन सकते है। (पद 1, 4, 5, 9) सत्य के लिए बहादुर बनने के लिए, परमेश्वर का वचन, (पद 17) आत्मा की तलवार है।

बुद्धवार — फिलिप्पियों 1 — यीशु मसीह के एक अच्छे सिपाही के समान, सत्य के लिए बहादुर बनों। (पद 27—28)

बृहस्पतिवार — फिलिप्पियों 2 — मसीह ने सबकुछ त्याग दिया (पद 7—8) इसलिए परमेश्वर ने उसे बाद में सबका प्रभु ठहराया।(पद 9—11)

शुक्रवार — फिलिप्पियों 3 — मसीह के साथ जुड़ने के लिए सब कुछ त्याग देना हमारे लिए बहुत ही लाभ की बात है (पद 7—14) मसीह पृथ्वी पर पुनः वापिस आयेगा (पद 20—21) और तब हो सकता है हमें उसके साथ शासन करने के लिए बुलाया जाये।

शनिवार — फिलिप्पियों 4— परमेश्वर हमें मसीह के द्वारा विजय और शान्ति दे सकता है। (पद 7) पवित्र विचार मनुष्य को पवित्र बनाते है। (पद 8—9)

मृत्यु या जीवन?

रविवार	भजनसंहिता 67
सोमवार	भजनसंहिता 72
मंगलवार	भजनसंहिता 88
बुद्धवार	भजनसंहिता 90
बृहस्पतिवार	भजनसंहिता 91
शुक्रवार	भजनसंहिता 95
शनिवार	भजनसंहिता 96

- मृत्यु वास्तविकता है।(भजन.88,90) यह पाप के कारण जगत में आयी।
- परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन बाईबिल की आशा है। इसलिए जो लोग उस राज्य के वारिस है उनका मृत्यु से पुर्नरूत्थान होना आवश्यक है।
- जो लोग परमेश्वर में विश्वास करते है उनको बहुतायत से आशीषें मिलेंगी और अनन्त आनन्द और शान्ति मिलेगी।
- भजनसंहिता इसी विषय की घोषणा करता है और बताता है कि हमारे लिए अब यह अवसर है कि हम मृत्यु को चुनें या जीवन को चुनें।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – भजनसंहिता 67 –यह भजन आने वाले परमेश्वर के राज्य का वर्णन करता है।केवल परमेश्वर ही शान्ति की आशीष दे सकता है। देखें गिनती 6:24–26

सोमवार – भजनसंहिता 72 –फिर से आने वाले राज्य का वर्णन दिया गया है। मसीह उस राज्य का राजा होगा। ध्यान दीजिये कि किस प्रकार का भयानक नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक बदलाव वहां पर होगा। पद 19 और गिनती 14:21 की तुलना करें।

मंगलवार – भजनसंहिता 88 – पद 10–12, मृत्यु के बाद कोई चेतना नही रहती है। आज जब हम जीवित है तो अभी हमारे पास अवसर है कि हम यीशु के पुनः आगमन के लिए तैयारी करें।

बुद्धवार – भजनसंहिता 90 – यह भजन मूसा के द्वारा लिखा गया। यह परमेश्वर की अनन्तता और मनुष्य के जीवन की संक्षिप्तता पर प्रकाश डालता है। इसलिए हमें अपने समय का बुद्धिमानी से प्रयोग करना चाहिये। (पद 12)

बृहस्पतिवार – भजनसंहिता 91 – जो परमेश्वर पर भरोसा रखते है वह उनके लिए शरणास्थान और सुरक्षा है।जो विश्वास रखते है वे बचाये जायेंगे। यीशु ने इस भजन को स्वंय अपने ऊपर लागू किया। (पद 11–12: मत्ती 4:6)

शुक्रवार – भजनसंहिता 95– यहां कुछ अन्य पद भी दिये गये है जो इस बात को बताते है कि आज जब आप जीवित है तो आपको विश्वास और कार्य करने की कितनी आवश्यकता है।

शनिवार – भजनसंहिता 96 – यीशु मसीह के आने पर, परमेश्वर इस जगत का न्याय धार्मिकता से करेगा। (पद 13 और भजनसंहिता 98:9) देखें प्रेरितों के काम 17:31 यह इस भजन को प्रतिध्वनित करता है।

चरण 6 सप्ताह 39

रविवार	1थिस्सलुनिकियों 1
सोमवार	1थिस्सलुनिकियों 2
मंगलवार	1थिस्सलुनिकियों 3
बुद्धवार	1थिस्सलुनिकियों 4
बृहस्पतिवार	1थिस्सलुनिकियों 5
शुक्रवार	2थिस्सलुनिकियों 1
शनिवार	2थिस्सलुनिकियों 2

यीशु मसीह का पुनः आगमन

■ जब यीशु मसीह सामर्थ और महिमा के साथ इस पृथ्वी पर पुनः आयेंगे तो परमेश्वर की योजना इस अदभुत रीति से पूरी होगी।

■ जब तक यीशु मसीह नही आते है तब तकः

सब के लिए मृत्यु अन्त है।
कोई पुर्नरूत्थान या भविष्य का जीवन नही है।
धर्मियों के लिए कोई उद्धार नही होगा।
मानवजाति पाप और स्वार्थ के द्वारा, अपने आप को और इस धरती को बर्बाद करेगी।
परमेश्वर के लोग आशीष नही पायेंगे।
परमेश्वर की प्रतिज्ञाऐं पूरी नही होंगी।
पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से नही भरेगी।
परमेश्वर की योजना असफल रहेगी।

थिस्सलुनिकियों को लिखी गयी पत्रियां

■ 'थिस्सलुनिकियों के विश्वासी पहले मूर्तिपूजा करते थे। परमेश्वर की प्रेरणा से प्रेरित पौलुस ने उन्हें, उनके नये जीवन के लिए प्रोत्साहित करने और निर्देश देने के लिए, दो पत्र लिखें। (पृष्ठ 33 पर दिये गये नक्शे को देखें)

■ यीशु मसीह के पुनः आगमन के बार–बार दोहरायें गये पद, विश्वासियों को एक बड़ी दिलासा देते है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 1थिस्सलुनिकियों 1 – पद 10 को देखें, यह यीशु के स्वर्ग से आने के विषय में बताता है।

सोमवार – 1थिस्सलुनिकियों 2 – पद 19 भी यीशु मसीह के, अपने अनुयायियों के पास पुनः आने के विषय में बताता है। 'भाईयों' शब्द बार– बार आया है, इसी प्रकार से विश्वासी लोग एक दूसरे को सम्बोधित करते है।

मंगलवार – 1थिस्सलुनिकियों 3 – पद 13 को देखें, यह पद बताता है कि यीशु अपने अनुयायियों का न्याय करने के लिए आयेंगे।

बुद्धवार – 1थिस्सलुनिकियों 4 – पद 13–17 देखें, यह पद यीशु मसीह के पुनः आगमन पर नया जीवन देने और अपने लोगों के साथ रहने के विषय में बताता है।

बृहस्पतिवार – 1थिस्सलुनिकियों 5 – पद 23 देखें, यह अपने लोगों के उद्धार के लिए यीशु के पुनः आगमन के विषय में बताता है। उसका आना अचानक होगा और हमें उसके लिए तैयार रहना चाहिये। (पद 3–5)

शुक्रवार – 2थिस्सलुनिकियों 1 – पद 7–10 को देखें, यह यीशु मसीह के पुनः आगमन और अधर्मियों को दण्ड देने के विषय में बताता है।

शनिवार – 2थिस्सलुनिकियों 2– पद 1 को देखें, यह यीशु मसीह के अपने लोगों के पास पुनः आगमन के विषय में बताता है, और पद 8 अधर्मियों के नाश होने के विषय में है।

येरूशलेम, पवित्र नगर

रविवार	भजनसंहिता 103
सोमवार	भजनसंहिता 104
मंगलवार	भजनसंहिता 110
बुद्धवार	भजनसंहिता 122
बृहस्पतिवार	भजनसंहिता 146
शुक्रवार	भजनसंहिता 149
शनिवार	भजनसंहिता 150

- परमेश्वर ने येरूशलेम को 'अपना नाम वहां देने के लिए' चुना। (व्यवस्थाविवरण 12:5, 1राजा 8:29, भजन.87)
- परमेश्वर के राज्य में येरूशलेम, धार्मिक और वैधानिक व्यवस्था का मुख्य केन्द्र बिन्दु होगा जो यीशु मसीह के अधिकार और सामर्थ से चलेगा। (यशायाह 2:3–4)
- यह एक महान राजा का मुख्य नगर होगा (भजन.2, 122 ,149), और महाद्वीपों का केन्द्र होगा, जैसा यीशु ने भी कहा (मत्ती 5:35)

संसार के नक्शे पर महाद्वीपों से घिरा येरूशलेम

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – भजनसंहिता 103 –परमेश्वर ने मनुष्य को अनगिनत बातों से लाभान्वित किया है लेकिन फिर भी वह मरता है (पद 14–16) परमेश्वर उनको बचाता है जो उसके बच्चे है। (पद 3–4, 11–13)

सोमवार – भजनसंहिता 104 –परमेश्वर ने मानवजाति पर अपने कृपालु प्रबन्ध के द्वारा अपने आप को प्रगट किया। इससे पहले कि देर हो जाये (पद 29) मनुष्य को, परमेश्वर की इस भलाई (पद 33) के प्रति आभार प्रकट करना चाहिये।

मंगलवार – भजनसंहिता 110 – यह वही भजन है जिसको यीशु ने, अपनी दिव्य उत्पत्ति को प्रमाणित करने के लिए, लोगों को बताया। (मत्ती 22:44) और यह पृथ्वी पर उसके आने वाले राज्य के विषय में बताता है।

बुद्धवार – भजनसंहिता 122 – येरूशलेम की शान्ति का अर्थ है, विश्व की शान्ति, जब यीशु अपने सहायकों के साथ सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य करेंगे। (पद 5)

बृहस्पतिवार – भजनसंहिता 146 – असहायों के लिए परमेश्वर भला है (पद 7–9) और मनुष्य को परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये न कि इस धरती के किसी ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति पर, जिसको किसी भी हाल में एक दिन मरना ही है।(पद 3–4)

शुक्रवार – भजनसंहिता 149– जब यीशु और उसके अनुयायी सिय्योन से शासन करेंगे (पद 1–2) तो उनका शासन अप्रतिरोध्य अधिकार के साथ होगा।(पद 6–9)

शनिवार – भजनसंहिता 150 – इसलिए आज जबकि तुम जीवित हो, तो परमेश्वर की भलाई और दिये गये उद्धार के मार्ग के लिए उसका धन्यवाद करों। (पद 6)

रविवार	1तिमुथियुस 1
सोमवार	1तिमुथियुस 2
मंगलवार	1तिमुथियुस 6
बुद्धवार	2तिमुथियुस 1
बृहस्पतिवार	2तिमुथियुस 2
शुक्रवार	2तिमुथियुस 3
शनिवार	2तिमुथियुस 4

तिमुथियुस को लिखी गयी पत्रियों में...मुख्य शिक्षायें

■ तिमुथियुस, प्रेरित पौलुस के द्वारा परिवर्तित किया गया एक नवयुवक था। वह पवित्र शास्त्र के अच्छे ज्ञान की नींव के साथ, लिस्तरा में पला बढ़ा था। (2तिमुथियुस 3:15)

■ जब वह इफिसुस के लोगों को विश्वासियों का अध्यक्ष बन गया तो पौलुस ने उसको अच्छी सलाह देने के लिए लिखा।

■ इफिसुस में पौलुस ने एक सच्चे सुसमाचार से भटकने के विषय में चेतावनी दी। (प्रेरितों 20:28–32)

■ इन पत्रियों में, रोम में सताये जाने से ठीक पहले, पौलुस फिर से विश्वास की उन आवश्यक महत्वपूर्ण शिक्षाओं को लिखकर बताता है, जिनको बदला नही जा सकता है।

(बाईबल की शिक्षाओं के सारांश को पृष्ठ 60–63 पर देखें)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 1 तिमुथियुस 1 – आधारभूत सिद्धान्तः 'मसीह यीशु पापियों को बचाने के लिए इस संसार में आया' (पद 15) केवल परमेश्वर ही सब पर राजा हैः वह आदर और महिमा के योग्य है। (पद 17)

सोमवार – 1 तिमुथियुसं 2 – एक आधारभूत सिद्धान्तः केवल एक ही परमेश्वर है और मनुष्यों और परमेश्वर के बीच एक ही बीचवई है अर्थात मसीह यीशु, जो मनुष्य है। (पद 5)

मंगलवार – 1 तिमुथियुस 6 – एक आधारभूत सिद्धान्तः केवल परमेश्वर ही अमर है और उसको कभी किसी मनुष्य ने नही देखा। (पद 16)

बुद्धवार – 2 तिमुथियुस 1 – एक आधारभूत सिद्धान्तः अमरता की प्रतिज्ञा की गयी है लेकिन सिर्फ यीशु मसीह के द्वारा। (पद 10)

बृहस्पतिवार – 2 तिमुथियुस 2 – एक आधारभूत सिद्धान्तः यीशु मसीह दाऊद का वंश है और उसको मृतकों में से जिलाया गया। (पद 8)

शुक्रवार – 2 तिमुथियुस 3 – एक आधारभूत सिद्धान्तः सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया। (पद 15–16)

शनिवार – 2 तिमुथियुस 4– आधारभूत सिद्धान्तः यीशु मसीह पुनः आयेंगे, मृतकों को जिलायेंगे और उनका न्याय करेंगे, और पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेंगे। (पद 1,8)

रविवार	यशायाह 1
सोमवार	यशायाह 2
मंगलवार	यशायाह 9
बुद्धवार	यशायाह 11
बृहस्पतिवार	यशायाह 25
शुक्रवार	यशायाह 26
शनिवार	यशायाह 32

भविष्यद्वक्ता

■ परमेश्वर ने इस्राएल और यहूदा को (अन्तिम पृष्ठ के पीछे बने चार्ट को देखें) झूठे देवताओं और धर्म से फेरने के लिए अपने भविष्यद्वक्ता भेजें। लेकिन उन्होंने परमेश्वर के सन्देशवाहकों का मजाक बनाया... और यहां तक कि जब तक अति नही हो गयी।(2इतिहास 36:16)

■ राजा उज्जियाह, योताम, आहाज, हिजिक्कियाह, यहूदा के राजा, जब यहूदा चारों ओर से अश्शूरियों से घिरा था, इन सब के समय में यशायाह ने भविष्यवाणी की। उसने यीशु और पृथ्वी पर राज्य के विषय में बहुत सी आश्चर्यजनक प्रतिज्ञाओं की जानकारी दी।

यशायाह के दिनों में अश्शूर और मिस्र

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – यशायाह 1 –पाप, कोढ़ और गन्दगी के समान है (पद 5–6) लेकिन परमेश्वर मनफिराने वालों को साफ करने में समर्थ है और वह करना चाहता है। (पद 16–18)

सोमवार – यशायाह 2 –राज्य की एक महिमामय तस्वीर से पहले, (पद 2–4) पाप और घमण्ड के विरूद्ध, परमेश्वर की चेतावनी और क्रोध होता है। (पद 10–22)

मंगलवार – यशायाह 9 – यीशु, दाऊद के सिंहासन पर सदा सर्वदा के लिए बैठेंगे।(पद 6–7) यह विश्वसनीयता स्वंय परमेश्वर की ओर से दी गयी है।(पद 7)

बुद्धवार – यशायाह 11 – यिशै और दाऊद के वंश से प्रतिज्ञा किया हुआ बालक यीशु था।(पद 1)

बृहस्पतिवार – यशायाह 25 – जिन लोगों ने परमेश्वर में विश्वास किया है वे अनन्त आनन्द और जीवन पायेंगे।(पद 8–9) 1कुरिन्थियों 15:54 और प्रकाशितवाक्य 21:4 देखें।

शुक्रवार – यशायाह 26– जो परमेश्वर में विश्वास करते है उनके लिए आशा और शान्ति है।(पद 1–3) कुछ लोग मृतकों में से कभी नही उठेंगे (पद 14) लेकिन कुछ जी उठेंगे।(पद 19)

शनिवार – यशायाह 32 – जब यीशु और उनके अनुयायी इस पृथ्वी पर शासन करेंगे (पद 1) तो धार्मिकता के साथ एक वास्तविक शान्ति होंगी।(पद 17)

चरण 6 सप्ताह 43

रविवार	इब्रानियों 1
सोमवार	इब्रानियों 2
मंगलवार	इब्रानियों 3
बुद्धवार	इब्रानियों 4
बृहस्पतिवार	इब्रानियों 5
शुक्रवार	इब्रानियों 10
शनिवार	इब्रानियों 11

इब्रानियों के नाम पत्री

■ यह पत्री यहूदी (इब्री) विश्वासियों के नाम, यीशु मसीह की सर्वोच्च स्थिति को बताने के लिए, लिखी गयी।

■ वह परमेश्वर को छोड़कर अन्य सब मनुष्यों में और सब चीजों में सबसे अच्छा है।

■ यह वही है जिसके विषय में पुराने नियम में प्रतिज्ञा की गयी और जो प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए और सब विश्वासियों को पुरस्कार देने के लिए पुनः आयेगा। (देखें अध्याय 11)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – इब्रानियों 1 – परमेश्वर ने स्वर्गदूतों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपने वचन भेजें, लेकिन इन सब में सबसे अच्छा उनका बेटा यीशु है(पद 1) जो सबसे महान है।

सोमवार – इब्रानियों 2 – यद्यपि वह परमेश्वर का पुत्र था लेकिन तो भी हमारी जैसी प्रकृति रखते हुए उसने पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की,(पद 14) और बहुतों के लिए उद्धार का मार्ग दिया।(पद 10)

मंगलवार – इब्रानियों 3 – हमें परमेश्वर के पुत्र में विश्वास रखने की आवश्यकता है, (पद 6) लेकिन हमें अन्त तक विश्वास में स्थिर बना रहना चाहिये।(पद 14)

बुद्धवार – इब्रानियों 4 – जब इस्राएल ने प्रतिज्ञा की हुयी भूमि में प्रवेश किया तो यहोशू उनको अनन्त विश्राम नही दे पाया, (पद 8) लेकिन यीशु अन्त में अपने लोगों को यह देगा।(पद 9–11)

बृहस्पतिवार – इब्रानियों 5 – यद्यपि वह परमेश्वर का पुत्र था लेकिन तौभी उसको आज्ञाकारिता सीखनी पड़ी और उनको मृत्यु से बचाया गया।(पद 8) लेकिन वह मेल्कीसेदेक के समान एक राजा–याजक होंगे। (पद 10) देखें उत्पत्ति 14:18

शुक्रवार – इब्रानियों 10 – यीशु मसीह पाप के लिए दिये गये, एक सिद्ध, अन्तिम और प्रभावी, बलिदान थे।(पद 11–13) हमें बलिदान में विश्वास करने की आवश्यकता है।(पद 38)

शनिवार – इब्रानियों 11– विश्वास, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को सुनिश्चित करता है(पद 1) बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है।(पद 6) इस अध्याय में उन सब लोगों के नाम है जिन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास किया (पद 39–40) और उनके विश्वास ने उनके जीवन को बदल दिया।

रविवार	यशायाह 40
सोमवार	यशायाह 42
मंगलवार	यशायाह 52
बुद्धवार	यशायाह 53
बृहस्पतिवार	यशायाह 55
शुक्रवार	यशायाह 60
शनिवार	यशायाह 61

परमेश्वर के साक्षी

- परमेश्वर इस बात के पर्याप्त प्रमाण देता है कि वह परमेश्वर है और वह सत्य है।
- आकाश और आकाशमण्डल उसकी सामर्थ को प्रगट करता है।(भजन.19)
- उसका वचन अद्‌भुत रीति से स्थिर है (1पतरस 1:25) जो उसकी योजना और उद्‌देश्य का वर्णन करता है।
- यीशु मसीह उसका विश्वसनीय और सच्चा साक्षी है, (प्रकाशितवाक्य 1:5) जिसने अपने जीवन, अपने चमत्कारों, अपनी मृत्यु और पुर्नरूत्थान के द्वारा, परमेश्वर की सच्चाई और अनन्त जीवन को प्रमाणित किया।(1यूहन्ना 1:1–2)
- प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और सब सच्चे विश्वासियों ने अपने कार्यो और जीने के तरीके से इस बात की साक्षी दी कि परमेश्वर सत्य है।
- इस्राएल परमेश्वर का इस बात का विशेष साक्षी है कि प्रभु परमेश्वर केवल एक ही है और जो कुछ वह कहता है वह हमेशा सच होता है। (यशायाह 43:12)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – यशायाह 40 –कमजोर मानवजाति से परमेश्वर दिलासा के शब्द कहता है (पद 1–8) और यीशु मसीह के द्वारा अद्‌भुत चीजों की प्रतिज्ञायें करता है। (पद 6–11,31)

सोमवार – यशायाह 42 –यह ‘सेवक’ के विषय में प्रतिज्ञाओं की पहली श्रंखला है। यीशु परमेश्वर का ‘सेवक’ और साक्षी था। (पद 1–8) इस अध्याय का संदर्भ नये नियम में भी दिया गया है। (मत्ती 12:18–21; 3:17)

मंगलवार – यशायाह 52 – यीशु परमेश्वर का दूत (पद 7) और सेवक (पद 13) था। परमेश्वर के लोगों को भी पवित्र होना चाहिये। (पद 11)

बुद्धवार – यशायाह 53 – घटना से 700 वर्ष पूर्व, यीशु के अस्वीकार किये जाने का बहुत ही आश्चर्यजनक वर्णन है। परमेश्वर का सेवक (यीशु), पाप और पापियों के कारण (पद 11) दुख उठायेगा लेकिन अन्त में उसकी विजय होगी। (पद 10,12)

बृहस्पतिवार – यशायाह 55 – परमेश्वर ने यीशु को एक साक्षी और एक अगुवे के रूप में दिया। (पद 4) यदि हम अब प्रतिउत्तर देते है तो हमें क्षमा (पद 7) मिल सकती है और हम प्रतिज्ञाओं के वारिस (पद 3) हो सकते है।

शुक्रवार – यशायाह 60 – परमेश्वर के विशेष लोग, इस्राएल, पुर्नगठित होंगे – जो परमेश्वर की भलाई, विश्वास और सामर्थ का साक्षी है।

शनिवार – यशायाह 61 – यीशु जानते थे कि पद 1 और 2 उन्हीं के विषय में है और उन्होंने इन पदों को नासरत में ऊंचे स्वर में पढ़ा। (लूका 4:16–21) वह दूल्हा है जो राज्यों को आशीष देगा। (पद 10–11)

रविवार	इब्रानियों 12
सोमवार	इब्रानियों 13
मंगलवार	याकूब 1
बुद्धवार	याकूब 2
बृहस्पतिवार	याकूब 3
शुक्रवार	याकूब 4
शनिवार	याकूब 5

विश्वास और कार्य

- विश्वास, परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध की नींव है। (इब्रानियों 11:6) हमें उसकी कृपालु प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना सीखना चाहिये; हम कभी भी उनके हकदार नही हो सकते है।
- लेकिन जब तक हम अपने जीवन के द्वारा विश्वास को प्रगट न करें तब तक उसका अस्तित्व नही हो सकता है। बिना कर्म के विश्वास मरा हुआ और अर्थहीन है।
- विश्वासी लोगों को विश्वास के साथ जीना चाहिये।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – इब्रानियों 12 – विश्वास के बहुत से अच्छे उदाहरण है जिनका हम अनुसरण कर सकते है लेकिन उनमें सबसे अच्छा यीशु का उदाहरण है और हमें उसको देखना चाहिये (पद 2)

सोमवार – इब्रानियों 13 – यीशु हम सब के लिए एक सबसे बड़ा उदाहरण है।(पद 7–8) हमें सिर्फ उसकी मृत्यु और पुर्नरूत्थान के द्वारा ही आशा मिली है। (पद 20–21)

मंगलवार – याकूब 1 – प्रलोभन हमारे अन्दर से आता है(पद 14) देखें कि मरकुस 7:21 में यीशु ने क्या कहा है। ज्ञान, पुर्नजनम और अन्त में जीवन का मुकुट, विश्वासी मनुष्यों के लिए परमेश्वर की ओर से मिलने वाली आशीषें है। (पद 5, 18, 12)

बुद्धवार – याकूब 2 – हमारे विश्वासपूर्ण कर्म हमारे विश्वास का परिणाम होने चाहिये। (पद 21–26)

बृहस्पतिवार – याकूब 3 – परमेश्वर के वचन से भरे हुए मस्तिष्क के द्वारा ही जीभ को नियन्त्रित किया जा सकता है। (पद 17)

शुक्रवार – याकूब 4 – 'संसार' (पद) का अर्थ है परमेश्वर रहित लोग। हमें 'संसार' और परमेश्वर के बीच चुनाव करना चाहिये। दीनता अतिआवश्यक है।(पद10)

शनिवार – याकूब 5– परमेश्वर के लोगों को धैर्य के साथ काम करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिये, जब तक कि यीशु मसीह वापिस न आ जायें। (पद 7)

यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर की भविष्यवाणी

रविवार	यिर्मयाह 1
सोमवार	यिर्मयाह 17
मंगलवार	यिर्मयाह 30
बुद्धवार	यिर्मयाह 31
बृहस्पतिवार	यिर्मयाह 33
शुक्रवार	यिर्मयाह 36
शनिवार	यिर्मयाह 38

■ यिर्मयाह, एक यहूदी याजक का पुत्र था। भविष्यद्वक्ता के रूप में उसका कार्य, यहूदा के राजा योशिय्याह के शासनकाल में प्रारम्भ हुआ और बाबुल के बंधुआई में जाने तक 40 वर्षो तक रहा। (अन्तिम पृष्ठ पर दिये गये चार्ट को देखें)

■ वह भविष्यद्वक्ता नही बनना चाहता था, (यिर्मयाह 1:6) परन्तु परमेश्वर ने अपना वचन उसके मुंह में रखा। (पद 9) इसलिए उसने इस्राएल और उसके चारों ओर के देशों के विषय में भविष्यवाणियां की। (पद 10)

■ यिर्मयाह की पुस्तक और उसके बाद विलापगीत में, परमेश्वर के लोगों पर आने वाले संकट के विषय में कहने के लिए उसके पास बहुत कुछ था।

■ परमेश्वर के सब भविष्यद्वक्ताओं के समान ही यिर्मयाह को भी अपने कार्य के कारण बहुत पीड़ा उठानी पड़ी (अध्याय 38) उसने आने वाले मसीहा के दुख उठाने और बहुत वर्षो तक दुख सहने के बाद देश के पुर्नगठन के विषय में बताया। परमेश्वर के राज्य की स्थापना के विषय में भी उसने भविष्यवाणियां की।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – यिर्मयाह 1 –परमेश्वर ने यिर्मयाह को बताया कि उसको क्या कहना था (पद 9) यहूदा देश के लोगों के पाप के कारण उनको दण्ड मिलना था।(पद 16) यह उत्तर दिशा (बाबुल का आक्रमण) से होना था। (पद 14 और यिर्मयाह 4:6; 6:1)

सोमवार – यिर्मयाह 17 –यहूदा की एकमात्र आशा परमेश्वर (पद 13–14) में थी और वैसी ही हमारी भी है।(पद 7–8) देखें भजनसंहिता 1:3 और प्रकाशितवाक्य 22:1–2

मंगलवार – यिर्मयाह 30 – इस्राएल की संरक्षण और पुर्नगठन के विषय में पहले से बता दिया गया था। (पद 10, 11, 24) यह पहले विश्व युद्ध से प्रारम्भ होकर दूसरे विश्व युद्ध तक बढ़ता गया।

बुद्धवार – यिर्मयाह 31 – इस्राएल एक राष्ट्र के रूप में नया मन रखेगा (पद 31–34) देखें इब्रानियों 8:7–13 और अन्त में वे यीशु मसीह को अपना राजा स्वीकार करेंगे।

बृहस्पतिवार – यिर्मयाह 33 – इस्राएल से प्रतिज्ञा (पद 19–26) के अन्तर्गत, परमेश्वर द्वारा पृथ्वी के संरक्षण की प्रतिज्ञा (उत्पत्ति 8:22) आश्वस्त है।

शुक्रवार – यिर्मयाह 36 – यहोयाकीम ने परमेश्वर के वचन को नष्ट करने का प्रयास किया (पद 23) लेकिन दूसरी पुस्तक लिखी गयी (पद 32) और परमेश्वर का वचन सच हो गया।

शनिवार – यिर्मयाह 38 – यिर्मयाह के जीवन के अनुभव (पद 6) यीशु मसीह की ओर संकेत करते है जिसको स्वंय भी कब्र में रखा गया था।

चरण 6 सप्ताह 47

रविवार	1पतरस 1
सोमवार	1पतरस 2
मंगलवार	1पतरस 3
बुद्धवार	1पतरस 5
बृहस्पतिवार	2पतरस 1
शुक्रवार	2पतरस 2
शनिवार	2पतरस 3

पतरस की पत्रियाँ

■ पतरस, जो कि एक मछुआरा था, उसने तीन वर्षो से भी अधिक समय तक विश्वासपूर्वक यीशु का अनुसरण किया लेकिन तो भी,जब यीशु को उसके सहारे कि सबसे अधिक आवश्यकता थी तो ऐसे समय में, एक कडुवें अफसोस के साथ, उसने तीन बार उसका इन्कार किया।

■ प्रभु यीशु मसीह के पुर्नरूत्थान के द्वारा, पतरस का विश्वास फिर से उभरा और यीशु ने उसको 'अपने मेमनों को चराने' का कार्य दिया। (यूहन्ना 21:15—18)

■ पतरस, सुसमाचार का, एक प्रसिद्ध प्रचारक हो गया, सबसे पहले तो यहूदियों के लिए (प्रेरितों 2—9) और फिर अन्य जातियों (गैर यहूदियों) के लिए। (प्रेरितों 10—12) वह बहुत बार जेल में गया और अन्त में जैसी यीशु ने भविष्यवाणी की थी, वह शहीद हो गया।

■ यहूदी विश्वासियों के नाम लिखी गयी उसकी पत्रियाँ, सम्पूर्ण संसार में फैल गयी, और यीशु को भेड़ों के मुख्य चरवाहें के रूप में, प्रचार किया। विश्वासियों को, इस अन्धेरें संसार में, उनकी पवित्र बुलाहट की याद दिलायी। उन्हें दुख और सतावों को स्वीकार करना चाहिये, लेकिन यीशु मसीह में परमेश्वर की प्रतिज्ञायें निश्चित है। उसके द्वारा हम भी संसार पर होने वाले न्याय से बच सकते है।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार — 1पतरस 1 — परमेश्वर ने विश्वासियों के लिए स्वर्ग में एक स्थान सुरक्षित किया है। जो अन्त में यीशु के द्वितीय आगमन पर (पद 7) पृथ्वी पर (पद 4—5) प्रगट होगा।

सोमवार — 1पतरस 2 — पुराने इस्राएल के समान ही विश्वासी लोग, जिम्मेदार (पद 12) विशेष चुने हुए लोग (पद 9—10) कहलायेंगे। उनको, यीशु के समान ही, अपने दैनिक जीवन में दोषरहित रहने का प्रयास करना चाहिये। (पद 13—17)

मंगलवार — 1पतरस 3 — यीशु मसीह हमारे लिए मिशाल है इसलिए यदि जरूरत पड़े तो (पद 14) हमें उसके लिए दुख उठाने के लिए भी तैयार रहना चाहिये। (पद 14) हमें उद्धार के लिए (नूह के समान) मसीह में बपतिस्मा (पद 21) लेना चाहिये।

बुद्धवार — 1पतरस 5 — यीशु मसीह अपने लोगों का चरवाहा है और जब वह पुनः आयेगा तो उनको महिमा देगा। (पद 4)

बृहस्पतिवार — 2पतरस 1 — परमेश्वर ने मसीह के द्वारा,(पद 4) अपने राज्य में,(पद 11) अनन्त महिमा देने की एक बड़ी और बेशकिमती प्रतिज्ञा की है। बाईबल परमेश्वर के वचन के रूप में पूरी तरह से विश्वासयोग्य है। (पद 21)

शुक्रवार — 2पतरस 2 — परमेश्वर ने नूह (पद 5) और लूत (पद 7) को बचाया और वह आने वाले न्याय (पद 9) से हमें भी बचा सकता है यदि हम यीशु मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायी बने रहे।(पद 20)

शनिवार — 2पतरस 3— 'आकाश और पृथ्वी' (पद 7) का अर्थ है मानवीय शासन और लोग। वे परमेश्वर के राज्य के द्वारा हटाये जायेंगे (पद 13)। देखें यशायाह 65:17—25

यहेजकेल की भविष्यवाणी

रविवार	यहेजकेल 2
सोमवार	यहेजकेल 3
मंगलवार	यहेजकेल 18
बुद्धवार	यहेजकेल 36
बृहस्पतिवार	यहेजकेल 37
शुक्रवार	यहेजकेल 38
शनिवार	यहेजकेल 39

■ यहेजकेल एक याजक था जिसको बाबुल में बंधुआई में ले जाया गया, जहां उसने भविष्यवाणी की।(अन्तिम पृष्ठ के पीछे दिया गया चार्ट देखें)

■ उसको बहुत सी भविष्यवाणी करने के लिए बुलाया गया था। उसको 'चिन्हों का मनुष्य' और 'मनुष्य का पुत्र' कहा गया, जो यीशु मसीह की ओर संकेत करता है।

■ सबसे अधिक उत्तेजक भविष्यवाणी अध्याय 37 में है जो हमारे दिनों से सम्बन्धित है! यह इस्राएल के पुर्नरूत्थान के एक आधुनिक चमत्कार और उसके आने वाले राजा की भविष्यवाणी का वर्णन करती है।(पद 22)फिर कभी इस भूमि पर उत्तर दिशा से (अध्याय 38) आक्रमण होगा, लेकिन परमेश्वर उसमें हस्तक्षेप करेगा।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – यहेजकेल 2 –परमेश्वर का सन्देश हमें लोगों को सुनाना चाहिये फिर चाहे सुनने वालों का कुछ भी प्रतिउत्तर क्यों न हो।(पद 5)

सोमवार – यहेजकेल 3 –जो लोग सच्चाई को जानते है उनकी यह जिम्मेदारी है कि वे दूसरों को इसके विषय में बतायें। (पद 17–18) यहेजकेल ने विश्वासपूर्वक इस कार्य को पूरा किया।

मंगलवार – यहेजकेल 18 – कोई भी जब सच्चाई को समझ जाता है तो उसको अपने पापों की जिम्मेदारी को स्वीकार करना चाहिए। (पद 4,32)

बुद्धवार – यहेजकेल 36 – यह अध्याय, इस्राएल के बनने के लिए, अरब के विरोध का वर्णन करता है। एक समय के लिए परमेश्वर ने इस्राएल की सुरक्षा की, जबकि वे यह नही पहचान पाये कि परमेश्वर उनके लिए कार्य कर रहा है।

बृहस्पतिवार – यहेजकेल 37 – लगभग 2000 वर्षो के बाद इस्राएल का पुनर्गठन, एक चमत्कार है और परमेश्वर के वचन का साक्षी है। इस्राएल के पुनर्गठन के विषय में दूसरा विवरण क्या है?

शुक्रवार – यहेजकेल 38 – भविष्य में इस्राएल पर, उत्तर की ओर से, होने वाले आक्रमण (पद 15)को एक दिव्य हस्तक्षेप के द्वारा परास्त किया जायेगा।

शनिवार – यहेजकेल 39 – इस्राएल जब परमेश्वर की ओर फिरेगा तो उसके शत्रु नाश होंगे और उसको शान्ति मिलेगी। परमेश्वर फिर उसको उसके पापों से शुद्ध करेगा।

चरण **6** सप्ताह 49

रविवार	1यूहन्ना 1
सोमवार	1यूहन्ना 1
मंगलवार	1यूहन्ना 1
बुद्धवार	1यूहन्ना 1
बृहस्पतिवार	2यूहन्ना
शुक्रवार	3यूहन्ना
शनिवार	यहूदा

यूहन्ना की पत्रियां, यहूदा की पत्री

■ यीशु मसीह के चेले, यूहन्ना, ने, एक सुसमाचार, तीन छोटी पत्रियां और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी।

■ उसके विषय में कहा गया कि वह चेला था 'जिससे यीशु प्रेम करता था', (यद्यपि वह उनमें से हर एक से प्रेम करता था!) और प्रेम और सत्य के दोनों विषय पत्रियों में बार–बार देखने को मिलते है।

■ झूठी शिक्षायें पहले ही कलिसियाओं में आ चुकी थी, ईसवीं की दूसरी शताब्दी के अन्त तक यीशु मसीह की सच्ची शिक्षायें तथाकथित मसीहियों के बीच झूठी शिक्षाओं में बदल चुकी थी और जो आज भी विद्यमान है।

■ पृष्ठ 60–63 पर दी गयी बाईबल की शिक्षाओं की सूचि की तुलना आज के बहुत से 'धार्मिक' सिद्धान्तों से कीजिये! यीशु मसीह का एक सच्चा अनुयायी केवल बाईबल की शिक्षाओं को मानता है किसी भी मनुष्य की नही।

■ यहूदा ने विश्वास की रक्षा के पक्ष में किये गये आग्रह पर, हमारे सामान्य उद्धार पर लिखना बंद कर दिया था।

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – 1यूहन्ना 1 – जो लोग परमेश्वर के वचन के प्रकाश (पद 7) में चलते है केवल उनके लिए ही परमेश्वर और यीशु मसीह से संगति रख पाना सम्भव है। हमारे पापों का अंगीकार ही हमारी क्षमा और शुद्धता का मार्ग प्रशस्त करता है।(पद 9)

सोमवार – 1यूहन्ना 2 – जो प्रकाश में चलते है वे परमेश्वर की सन्तान है। वे सब एक साथ मसीह के आने (पद 28) की प्रतिक्षा करते है। इस दुनिया के तौर तरीके और उनको मानने वाले गुजर जायेंगे। (पद 17)

मंगलवार – 1यूहन्ना 3 – क्या ही अद्भुत प्रेम परमेश्वर ने हमें दिखाया है (पद 1)। जो परमेश्वर की सन्तान है वे सब मसीह के आने पर उसके समान बनाये जायेगें। (पद 2)

बुद्धवार – 1यूहन्ना 4 – जो परमेश्वर की सन्तान है और सच्चाई को जानते है(पद 1) और एक दूसरे से प्रेम रखते है (पद 7), वे न्याय के दिन (पद 17) के लिए तैयार रहने का प्रयास करते है।

बृहस्पतिवार – 2यूहन्ना – जो परमेश्वर की सन्तान है वे सत्य को जानते(पद 1) है और एक दूसरे से प्रेम रखते है।(पद 5)

शुक्रवार – 3यूहन्ना – जो परमेश्वर की सन्तान है वे सत्य में चलते है (पद 1–4)और सबसे प्रेम रखते है।(पद 5)

शनिवार – यहूदा– जो मसीह के है उनको उस विश्वास (पद 3) के लिए, जो उनको एक ही बार सौंपा गया था, यत्न करने की आवश्यकता है। परमेश्वर, यीशु के आने तक, हमें ठोकर खाने से बचा सकता है।(पद 24–25)

दानिय्येल की भविष्यवाणी

रविवार	दानिय्येल 2
सोमवार	दानिय्येल 3
मंगलवार	दानिय्येल 5
बुद्धवार	दानिय्येल 6
बृहस्पतिवार	दानिय्येल 7
शुक्रवार	दानिय्येल 9
शनिवार	दानिय्येल 12

■ दानिय्येल एक बंधुआ यहूदी राजकुमार था, जो बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के द्वारा बंधुआई में ले जाया गया था।

■ उसकी प्रेरित पुस्तक, एक भविष्यवाणी के स्वप्न और परमेश्वर की अपने लोगों की देखभाल करने की घटनाओं का बहुत ही रोचक मिश्रण है।

राजा का स्वप्न

■ परमेश्वर ने राजा नबूकदनेस्सर को एक स्वप्न दिया। यह स्वप्न कुछ निश्चित सम्राज्यों के इतिहास के विषय में थी जिनमें सबसे अन्तिम परमेश्वर का राज्य था। दानिय्येल की अन्य भविष्यवाणी इसी विषय का विकास करती है।

सोने का सिर
बाबुल का सम्राज्य

चांदी की छाती और भुजायें
मादी–फारसी का सम्राज्य

पीतल का पेट और जांगें
यूनान का सम्राज्य

लोहे की टांगें
रोम का सम्राज्य

लोहे और मिट्टी के पैर

''अपने आप'' उखड़ा एक पत्थर
मसीह का आने वाला राज्य

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – दानिय्येल 2 – वर्तमान मनुष्य के राज्य की जगह परमेश्वर का राज्य (पद 44) स्थापित हो जायेगा और यह राज्य सदा सर्वदा के लिए रहेगा।

सोमवार – दानिय्येल 3 – हमें केवल परमेश्वर की अराधना करनी चाहिये। परमेश्वर में विश्वास से हमें ऐसा साहस मिलता है कि मनुष्य चाहे हमारे साथ कुछ भी क्यों न करें हम उसका सामना करने में समर्थ हो जाते है।(पद 17,18)

मंगलवार – दानिय्येल 5 – मनुष्य के राज्य (बाबुल के समान) मानो 'तराजू में तोले गये है और हल्के पाये गये है'।(पद 27) ये बदले जायेंगे।

बुद्धवार – दानिय्येल 6 – दानिय्येल के जीवन के अनुभव यीशु मसीह की ओर संकेत करते है, जिसको एक बंद कब्र (पद 17) में रखा गया था पर परमेश्वर ने उसे बचाया।

बृहस्पतिवार – दानिय्येल 7 – परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य का राज्य एक पशु के समान है। परमेश्वर अपना स्वंय का राज्य स्थापित करेगा। (पद 14,27)

शुक्रवार – दानिय्येल 9 – इस्राएल के पाप के बावजूद भी परमेश्वर ने दानिय्येल की प्रार्थना (पद 21) के तीव्र प्रतिउत्तर में एक मसीहा और उद्धारकर्ता (पद 25,26)की प्रतिज्ञा की।

शनिवार – दानिय्येल 12 – परमेश्वर के लोग बचाये जायेंगे (पद 1) , पुर्नरूत्थान और न्याय होगा।(पद 2)

रविवार	होशे 13
सोमवार	योएल 3
मंगलवार	मीका 5
बुद्धवार	जकर्याह 8
बृहस्पतिवार	जकर्याह 12
शुक्रवार	मलाकी 3
शनिवार	मलाकी 4

'छोटे' भविष्यद्वक्ता

■ पुराने नियम में दानिय्येल के बाद की बारह पुस्तकों को कभी कभी छोटे भविष्यद्वक्ता भी कहा जाता है और वह इसलिए नही कि वे कम महत्वपूर्ण है बल्कि इसलिए कि ये पुस्तकें छोटी है।

■ परमेश्वर की ओर से उनका सन्देश उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल ओर दानिय्येल का है।

■ हम अब यहां केवल पाँच पुस्तकों को संक्षिप्त में देखेंगे।

(बाईबल के इतिहास में इन छोटे भविष्यद्वक्ताओं को देखने के लिए, कृपया अन्त में दिये गये चार्ट को देखें।)

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – होशे 13 – यह भविष्यवाणी, इस्राएल के अविश्वास के बावजूद भी, परमेश्वर के उनके प्रति प्रेम को चित्रित करती है। परमेश्वर के (चाहे यहूदी हो या अन्यजाति) (1:10) लोगों को नेतृत्व (पद 5), एक राजा (पद 10) और मृत्यु से बचाव (पद 14) की आवश्यकता है। देखें 1 कुरिन्थियों 15:54–57

सोमवार – योएल 3 – सभी देश येरूशलेम में युद्ध के लिए आयेंगे। फिर परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा हस्तक्षेप करेगा।

मंगलवार – मीका 5 – यीशु, जो बेतलहम में पैदा हुए (पद 2), एक अच्छे चरवाहे है जो अपने लोगों को बचायेंगे और उनका नेतृत्व करेंगे।(पद 4–5)

बुद्धवार – जकर्याह 8 – जब इस्राएल पूरी तरह से बस जायेगा और अपना मन फिरायेगा (पद 7–8), तो सारे देश, परमेश्वर के उसके साथ किये गये अदभुत कामों के कारण, उसका सम्मान करेंगे।(पद23)

बृहस्पतिवार – जकर्याह 12 – जब इस्राएल सम्पूर्ण रूप से यीशु को अपना उद्धाकर्ता (पद 10) स्वीकार कर लेगा, तभी वह पूरी तरह से बस पायेगा।

शुक्रवार – मलाकी 3 – जब यीशु आकर न्याय (पद 2) करेंगे तो इस्राएल को शुद्ध किया जायेगा। यदि हम अब परमेश्वर में श्रद्धा रखते है और अपने को उसके प्रति समर्पित करते है तो वह हमें सुरक्षित करेगा। (पद 17)

शनिवार – मलाकी 4 – पुराना नियम आशीष (पद 2) या श्राप (पद 6) पर टिप्पणी के साथ समाप्त होता है। हमारे लिए इसमें से क्या है? इस्राएल परमेश्वर को प्रसन्न करने में असफल रहा। क्या हम अलग बन सकते है!

यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य

रविवार	प्रकाशितवाक्य	1
सोमवार	प्रकाशितवाक्य	2
मंगलवार	प्रकाशितवाक्य	3
बुद्धवार	प्रकाशितवाक्य	5
बृहस्पतिवार	प्रकाशितवाक्य	19
शुक्रवार	प्रकाशितवाक्य	21
शनिवार	प्रकाशितवाक्य	22

■ बाईबल की अन्तिम पुस्तक, यीशु मसीह और आने वाले राज्य के संदेश को पूरा करती है।

■ यह परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह को (प्रका.1:1) इसलिए दी गयी कि वह अपने सेवकों को वह बातें बता सके जो यीशु के स्वर्ग से प्रगट होने से पहले घटेंगी।

■ यह बात यूहन्ना को भी बतायी गयी थी जब वह पतमुस के टापू पर निर्वासन की अवस्था में था।

■ इसमें सांकेतिक भाषा दी गयी है इसको केवल सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र के प्रकाश में ही समझा जा सकता है।

■ आरम्भिक अध्याय समझने में आसान है जो एशिया (नक्शा देखें) की सात कलिसियाओं को सम्बोधित है। इनमें हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सलाहें है।

एशिया की सात कलिसियाऐं
1–इफिसुस
2–स्मुरना
3–पिरगमुन
4–थूआतीरा
5–सरदीस
6–फिलेदिलफिया
7–लौदीकिया

प्रतिदिन की टिप्पणियाँ

रविवार – प्रकाशितवाक्य 1 – परमेश्वर ने अपने सेवकों को शिक्षा देने के लिए यीशु मसीह के द्वारा यह पुस्तक दी।(पद 1) क्या हम उसके सेवक है? यदि हां, तो हम इसे पढ़ें, सुनें और पालन करें (पद 3)

सोमवार – प्रकाशितवाक्य 2 – यदि हमारे सुनने के कान है तो क्या हम परमेश्वर के वचन को सुनते है?(पद 7,11,17,29) विश्वासियों से की गयी प्रतिज्ञाओं को देखें।

मंगलवार – प्रकाशितवाक्य 3 – गुनगुना नही बल्कि ठंडा या गर्म विश्वासी होना अच्छा है।(पद 15) हम कैसे विश्वासी है? वे कौन है जो 'विजयी' होंगे?

बुद्धवार – प्रकाशितवाक्य 5 – जो मसीह के है वे पृथ्वी पर सब राज्यों पर शासन करेंगे। (पद 10) क्या हम मसीह के है?

बृहस्पतिवार – प्रकाशितवाक्य 19 – जो मसीह के है वे उसकी धार्मिकता को पहिने है।(पद 8) और उसके साथ सदा के लिए एक होंगे।(पद 7)

शुक्रवार – प्रकाशितवाक्य 21 – 'नया येरूशलेम' मसीह की दुल्हन है– अर्थात वे जो सदा के लिए उसके साथ एक है(पद 2,9,10) लेकिन कुछ निकाले जायेंगे। (पद 8)

शनिवार – प्रकाशितवाक्य 22 – बाईबल मसीह के पुनः आगमन की प्रार्थना के साथ समाप्त होती है।(पद 20) क्या हमारी भी यही प्रार्थना है, और क्या हम उसके आगमन के लिए तैयार है?

बाईबल की शिक्षाओं का सांराश

1 बाईबल परमेश्वर का वचन है जो उसकी प्रेरणा से लिखा गया है। (2तिमु.3:16; इब्रानियों 1:1; 2पतरस1:21)

2 केवल एक ही परमेश्वर है, जो पिता है, और जिसने इस संसार को बनाया है। (व्यव.6:4; 1कुरि.8:6; 1तिमु.2:5; यशा.45:6, 12)

3 पवित्र आत्मा परमेश्वर की सामर्थ है जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी इच्छा पूर्ति करता है।(लूका 1:35; प्रेरितों 10:38; प्रेरितों 8:18–19)

4 यीशु परमेश्वर के पुत्र है। परमेश्वर उनका पिता है।(लूका1:35; मत्ती 3:17; भजन.2:7)

5 कुवांरी मरियम से पैदा होने के कारण यीशु मनुष्य का पुत्र है।(गला.4:4; 1तिमु.2:5; फिलि.2:8)

6 यीशु ने पाप और मृत्यु पर विजय पायी इसलिए उनकी हमारे समान ही मानवीय प्रकृति थी। (इब्रा.2:14; इब्रा. 4:15; रोमियों 8:3)

7 यीशु ने सभी प्रलोभनों पर विजय पायी और निष्पाप निकले और अपने अनुयायियों को पाप और मृत्यु से बचाने के लिए उन्होंने अपने प्राण दिये।(रोमियों 5:6; यूहन्ना 3:16; यशा.53:5)

8 पहला मनुष्य आदम था, जिसनें परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा और पाप और मृत्यु को इस जगत में लेकर आया।(उत्पत्ति 3:17–19; रोमियों 5:12; 1कुरि.15:21–22)

9 सब मनुष्यों की पाप करने की प्रवृत्ति होने के कारण वे पाप करते है और इसलिए मरते है।(रोमियों 6:23; सभो. 3:19–20; भजन.146:3–4)

10 मृत्यु के बाद कुछ भी चेतन नही रहता है।(यशा. 38:18–19; सभो.9:5–6; भजन.89:48)

11 'आत्मा' का अर्थ है शरीर, समझ या सांस, लेकिन यह अमर नही है। आत्मा मरती है।(यशा. 38:17; यहोशु 11:11; यहे.18:4)

12 'नरक' कब्र का दूसरा नाम है। (योना 2:1–3; भजन. 116:3; भजन.16:10)

13 'नरक की आग' का प्रयोग न्याय के दिन के बाद,अविश्वासियों के सम्पूर्ण नाश के लिए किया गया है। यह इब्रानी शब्द 'गिहेना' का अनुवाद है जो येरूशलेम के बाहर एक घाटी थी जहाँ कूड़ा और अपराधियों को जलाया जाता था, यह अनन्त यातना का कोई स्थान नही था। (मरकुस9:43; मत्ती 10:28 – मलाकी 4:1–3 के साथ तुलना करें)

14 परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जिलाया और बाद में स्वर्ग में चढ़ाया। (प्रेरितों 1:3, 9; प्रका.1:18; प्रेरितों.10:40; मरकुस 16:19)

15 परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में केवल एक ही बीचवई है वह यीशु है।(1तिमु.2:5; इब्रा.7:24–25; प्रेरितों 4:12)

16 यीशु मसीह व्यक्तिगत रूप से इस पृथ्वी पर वापिस आयेंगे।(प्रेरितों 1:10–11; मत्ती 16:27: प्रेरितों 3:20–21)

17 यीशु मसीह जब आयेंगे तो वे बहुत से मरें हुओं को जिलायेंगे।(1थिस्स.4:16; यूह.5:29; दानि.12:1–2)

18 मरने के बाद जीवन पाने की केवल एक ही आशा है और वह है पुर्नरूत्थान।(1कुरि.15:13–14; फिलि.3:20–21; प्रेरितों 24:15)

19 पुर्नरूत्थान के बाद न्याय होगा। (2कुरि.5:10; 2तिमु.4:1; रोमियों 14:10–12)

20 सभी मनुष्यों का शरीर अमरता में बदल जायेगा और अमर जीवन सबको इस पृथ्वी पर ही मिलेगा। यह परमेश्वर का उपहार है।(मत्ती5:5; 1कुरि.15:53–54; फिलि.3:20–21)

21 अब्राहम से की गयी प्रतिज्ञाओं के अनुसार, विश्वासी लोग यथार्थ में इस पृथ्वी पर वारिस होंगे।(उत्पत्ति 13:15; उत्पत्ति 28:13; इब्रा.11:8–9; 39–40)

22 दाऊद से की गयी प्रतिज्ञाओं के अनुसार, यीशु इस्राएल में परमेश्वर के राज्य के राजा होंगे।(2शेमू.7:12–14; यशा.9:6–7; लूका 1:30–33)

23 येरूशलेम परमेश्वर के राज्य की राजधानी होगी।(यहे.21:27; यशा.24:23; मत्ती.5:35)

24 यीशु के इस संसार पर शासन करने में उसके अमर अनुयायी, उसकी सहायता करेंगे।(दानि.7:27; प्रका.2:26; लूका 22:30)

25 परमेश्वर का राज्य, कभी ना समाप्त होने वाली धार्मिकता, प्रसन्नता और शान्ति लेकर आयेगा। (यशा. 32:17; यशा.2:4; भजन.67:4–7)

26 मसीह एक हजार वर्षो तक इस पृथ्वी के नाशवान लोगों पर राज्य करेंगे। उसके बाद पाप और मृत्यु जाती रहेगी और यह पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से भर जायेगी।(प्रका. 20:6; प्रका.21:4; 1कुरि.15:24–26)

27 हमारे अन्दर पाप करने की प्रवृत्ति का दूसरा नाम दुष्टात्मा है यह कोई दूसरी दिव्य शक्ति नही है।मसीह भी हमारे समान परीक्षाओं में पड़ा लेकिन निष्पाप रहकर विजय प्राप्त की। इसलिए वह हमारी सहायता करने में सक्षम है और उसने अपनी यह विजय हमारे साथ बांटी है।(याकूब1:14–15; इब्रा.2:14; इब्रा.9:26)

28 शैतान का अर्थ है 'विरोधी' और यह शब्द उन लोगों या चीजों के लिए प्रयोग किया गया जिन्होंने परमेश्वर की इच्छा का विरोध किया। यहां तक कि पतरस को भी एक बार शैतान कहा गया (मत्ती16:23),परमेश्वर भी कभी–कभी अधर्मियों के विरूद्ध एक विरोधी के रूप में काम कर सकता है।(गिनती22:22; 2शेमू.24:1की तुलना 1इतिहास 21:1 के साथ करें)

29 दुष्टात्मा या शैतान कोई दिव्य सामर्थ नही है। दिमागी बिमारियों से ग्रस्त लोगों के विषय में यह कहा जाता था कि उनमें दुष्टात्मा है– जिसका मतलब है एक बीमार मस्तिष्क। केवल एक ही परमेश्वर है। विभिन्न धर्मो के द्वारा माने जाने वाली किसी दुष्टात्मा का कोई अस्तित्व नही है।(1कुरि.10:20; प्रेरितों17:18–अन्य देवताओं = दुष्टात्मा; यशा.45:5,7)

30 उद्धार में पापों की क्षमा शामिल है।धार्मिकता केवल मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की करूणा द्वारा ही मिल सकती है।(रोमियों4:13; 21–25; इब्रा.11:6; गला. 3:26)

31 सम्पूर्ण सच्चे हृदय से परमेश्वर के राज्य की बातों और यीशु मसीह के नाम का अंगीकार करने के बाद, उद्धार के लिए पानी में डूबकी द्वारा बपतिस्मा लेना बहुत ही आवश्क है। ऐसा करने के द्वारा यह प्रगट होता है कि हम अपने पुराने जीवन के लिए 'मर' चुके है और मसीह में एक नये जीवन को पाकर फिर से 'जीवित' हुए है। जब हम मसीह का अनुसरण करते है तो हम उसकी धार्मिकता को पहिन लेते है। (यूह.3:5; प्रेरितों.8:12; मरकुस 16:16; प्रेरितों.22:16; प्रेरितों.8:38; रोमियों 6:4; गलातियों 3:27–29)

32 इस्राएल परमेश्वर के चुने हुए लोग है। लेकिन तो भी वे अनाज्ञाकारिता के कारण तितर बितर हो गये, लेकिन बाईबल की भविष्यवाणी के अनुसार उनको फिर से इकट्ठा किया गया।(योएल3:2; यहे.37:12; यहे.37:22)

33 जब इस्राएल मन फिराकर और यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करेगा तो उनको शुद्ध किया जायेगा और वे सभी राष्ट्रों पर मुखिया होंगे। (जक.12:10; यिर्म.31:33; जक.8:23; रोमियों 11:25–29)

34 यीशु मसीह ने अपने स्मरण के लिए, अपने सच्चे अनुसरण करने वालों के लिए प्रभु भोज को स्थापित किया। (लूका22:19–20; प्रेरितों2:42; 1कुरि.11:23–26)

35 केवल एक ही सच्चा सुसमाचार है जो बदला नही जा सकता है।(इफि.4:4–6; गला.1:8; यहूदा 3)

36 जिन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया है और मसीह में बपतिस्मा लिया है वे 'मसीह में भाई–बहन' है और परमेश्वर उनको अपने बच्चें कहता है।(1यू.3:1; यू.1:12; 1पत.1:23)

वे सब लोग जो इन शिक्षाओं पर विश्वास करते है, उनको एक धार्मिक मसीह जीवन जीने का प्रयास करना चाहिये।

नोटः क्रिस्टडेलफियन्स नाम का अर्थ है 'मसीह में भाई' (कुलु.1:2) बाईबल के विभिन्न विषयों पर मुफ्त पुस्तकें और बाईबल पत्राचार पाठयक्रम उपलब्ध है।

प्रत्येक अवसर के लिए बाईबल

परमेश्वर का वचन जीवन के प्रत्येक बदलते समय में आराम और सामर्थ प्रदान कर सकता है।

यहां कुछ उदाहरण है जिनसे सहायता मिल सकती हैः

■ दुःख के समय में	भजनसंहिता 90
■ डर के समय में	भजनसंहिता 91
■ अकेलेपन के समय में	भजनसंहिता 142
■ बिमारी के समय में	भजनसंहिता 103

यदि आप चिंतित हैः

■ अपने बच्चों के विषय में	नीतिवचन 4
■ भविष्य के विषय में	लूका 21
■ जीवन किस लिए है	यशायाह 45
■ परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में	यशायाह 55

सूचीपत्र

■ पहला चरण — पृष्ठ

सप्ताह 1: भजनसंहिता 19, उत्पत्ति 1, लूका 2, 1कुरिन्थियों 12, मरकुस 4, सभोपदेशक 3, 2तिमुथियुस 3 — 3

■ दूसरा चरण

सप्ताह 2: उत्पत्ति 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 — 5
3: मत्ती 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 — 6

■ तीसरा चरण

सप्ताह 4: उत्पत्ति 11, 12, 13, 14, 15, 17,19 — 8
5: मत्ती 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14 — 9
6: उत्पत्ति 22, 26, 27, 28, 29, 30, 31 — 10

■ चौथा चरण

सप्ताह 7: मत्ती 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21 — 12
8: उत्पत्ति 32, 33, 37,39, 40, 41, 42 — 13
9: मत्ती 22, 23, 24, 25,26, 27, 28 — 14
10: उत्पत्ति 43, 44, 45, 46, 47, 49, 50 — 15

■ पाचवां चरण

सप्ताह11: मरकुस 1, 2, 3, 6, 7, 8, 9 — 17
12: निर्गमन 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 — 18
13: मरकुस 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 — 19
14: निर्गमन 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14 — 20
15: लूका 1, 2, 4, 5, 7, 9, 10 — 21
16: निर्गमन 16, 17, 19, 20, 24, 25, 32 — 22
17: लूका 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17 — 23
18: लैव्यव्यवस्था 8, 10, 16, 17, 23, 25, 26 — 24
19: लूका 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24 — 25
20:गिनती 14, 17, 20, 21, 22, 23, 24 — 26
21: यूहन्ना 1, 3, 4, 10, 11, 15, 17 — 27
22: व्यवस्थाविवरण 1, 2, 3, 6, 8, 18, 28 — 28
23: प्रेरितों के काम 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 — 29
24: यहोशू 1, 2, 3, 4, 6, 20, 24 — 30
25: प्रेरितों के काम 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14 — 31
26: न्यायियों 4, 7, 14, रूत 1, 2, 3, 4 — 32

■ छठवां चरण

सप्ताह27: प्रेरितों के काम 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21 — 34
28: 1शेमूएल 1, 2, 3, 8, 9, 10, 15 — 35
29: प्रेरितों के काम 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28 — 36
30: 1शेमूएल 16, 17, 2शेमूएल 1, 2, 5, 7, 24 — 37
31: रोमियों 5, 6, 8, 9, 10, 12, 13 — 38
32: 1राजा 3, 5, 12, 17, 18, 2राजा 5, 2इतिहास 36 — 39
33: 1कुरिन्थियों 1, 2, 3, 10, 11, 13, 15 — 40
34: भजनसंहिता 1, 2, 6, 16, 19, 22, 23 — 41
35: 2कुरिन्थियों 11, गलातियों 1, 2, 3, 4, 5, 6 — 42
36: भजनसंहिता 32, 37, 45, 46, 48, 49, 51 — 43
37: इफिसियों 4, 5, 6, फिलिप्पियों 1, 2, 3, 4 — 44
38: भजनसंहिता 67, 72, 88, 90, 91, 95, 96 — 45
39: 1थिस्सलुनिकियों 1, 2, 3, 4, 5, 2थिस्सलुनिकियों 1, 2 — 46
40: भजनसंहिता 103, 104, 110, 122, 146, 149, 150 — 47
41: 1तिमुथियुस 1, 2, 6, 2तिमुथियुस 1, 2, 3, 4 — 48
42: यशायाह 1, 2, 9, 11, 25, 26, 32 — 49
43: इब्रानियों 1, 2, 3, 4, 5, 10, 11 — 50
44: यशायाह 40, 42, 52, 53, 55, 60, 61 — 51
45: इब्रानियों 12, 13, याकूब 1, 2, 3, 4, 5 — 52
46: यिर्मयाह 1, 17, 30, 31, 33, 36, 38 — 53
47: 1पतरस 1, 2, 3, 5, 2पतरस 1, 2, 3 — 54
48: यहेजकेल 2, 3, 18, 36, 37, 38, 39 — 55
49: 1यूहन्ना 1, 2, 3, 4, 2यूहन्ना, 3यूहन्ना, यहूदा — 56
50: दानिय्येल 2, 3, 5, 6, 7, 9, 12 — 57
51: होशे 13, योएल 3, मीका 5, जकर्याह 8, 12, मलाकी 3, 4 58
52: प्रकाशितवाक्य 1, 2, 3, 5, 19, 21, 22 — 59

■ सातवां चरण — 64

■ बाईबिल की शिक्षाओं को सारांश — 60

बाईबल, जो आपके हाथों में है

पुराना नियम

परमेश्वर, लेखक – पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर के पवित्र लोगों के द्वारा लिखा गया। 2पतरस 1:21, इब्रानियों 1:1

पहले: पेपिरस पर
बाद में: चर्मपत्र पर
अधिकांश भाग हिब्रू में, लेकिन कुछ भाग अरबी में है।

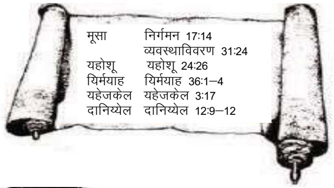

शास्त्रियों ने नकल किया
270 से 130 ई.पू. यूनानी में अनुवाद किया गया
सेपटुऐजिन्ट (The Septuagint)

916 ईसवी में हिब्रू विद्वानों ने शब्दोच्चारण पाठों (Masoretic Text)को बनाया।
(मेजोरेट–परंम्परा वाले व्यक्ति या सम्भवतः हस्तांतरित करने वाला)

नया नियम

परमेश्वर, लेखक – यीशु के चेलों के द्वारा लिखा गया।
यूहन्ना 14:26

यूनानी पांडुलिपि के रूप में लिखा गया।
(दोनों तरफ लिखे गये पृष्ठ)

400 ईपू जेरोम के द्वारा लैटिन में अनुवादित किया गया। (वलगेट)

लगभग 1200 ई. में लैटिन मूलपाठ को प्रधान पादरी स्टीफन लेंगटन के द्वारा अध्यायों में बांटा गया

लैटिन

डयूऐ रीम्स
1609

जॉन वेक्लीफ
1384

इरास्मस 1516
(केवल नये नियम के लैटिन और यूनानी पाठो को संशोधित किया)

हिब्रू

टिंडेल 1526

पुराने नियम का आंशिक अनुवाद

अंग्रेजी नया नियम
(1534 में संशोधित)

कवरडेल 1535

सम्पूर्ण
पुराना नियम

सम्पूर्ण बाईबल
1535

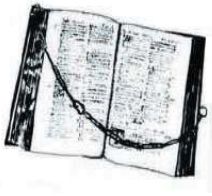

कवरडेल 1539
ग्रेट बाईबल
''कलिसियाओं में पढ़े जाने के लिए निर्धारित''

जिनेवा बाईबल 1560
(सबसे पहली बाईबल जिसको अध्यायों और पदों में बांटा गया)

किंग जैम्स/ऑथोराइज्ड 1611
सभी पुरानी विद्वता को आकर्षित किया

अंग्रेजी

आधुनिक संस्करण है:
1885 संशोधित संस्करण (रिवाइज्डवर्जन)
1952 संशोधित मानक संस्करण (रिवाइज्ड स्टैन्डर्ड वर्जन)
1966 येरुशलेम बाईबल
1970 नयी अंग्रेजी बाईबल (न्यू इंग्लिश बाईबल)
1976 सुसमाचार बाईबल (गुड न्यूज बाईबल)
1979 नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण (न्यू इन्टरनेशनल वर्जन)
1982 संशोधित अधिकृत संस्करण (रिवाइज्ड आथोराईज्ड वर्जन)
आधुनिक संस्करणों को निम्न से लाभ मिला:

- **कोडेक्स साईनाईटिकस**– चौथी शताब्दी ईसवी, पुराने नियम का अधिकांश भाग और सम्पूर्ण नये नियम का यूनानी अनुवाद। सीने पर्वत की तलहटी पर स्थित सन्त कैथरीन के आश्रम में इसको 1844 में खोजा गया।
- **मृत सागर स्क्रॉल**– यीशु के जन्म से पहले लिखा गया। 70 ईसवी से पहले, मृत सागर के पास की गुफाओं में छिपाया गया। इनको 1947 में खोजा गया। ऐस्तर की पुस्तक के अलावा पुराने नियम की सभी पुस्तकों का अंश इनमें निहित है। ये दिखाते है कि किस प्रकार नकल करने में होने वाली त्रुटियां बहुत ही कम और निरर्थक की गयी है।
- **एबला टेबलेट्स**–1976 में उत्तरी कोरिया में पाये गये। हजारों की संख्या में पायी गयी ये मिट्टी की टेबलेट्स अब्राहम से जुड़ी दुनिया के हमारे ज्ञान को बढ़ती है और इस प्रकार पुराने नियम के लेखों की विश्वसनीयता को प्रमाणित करती है।

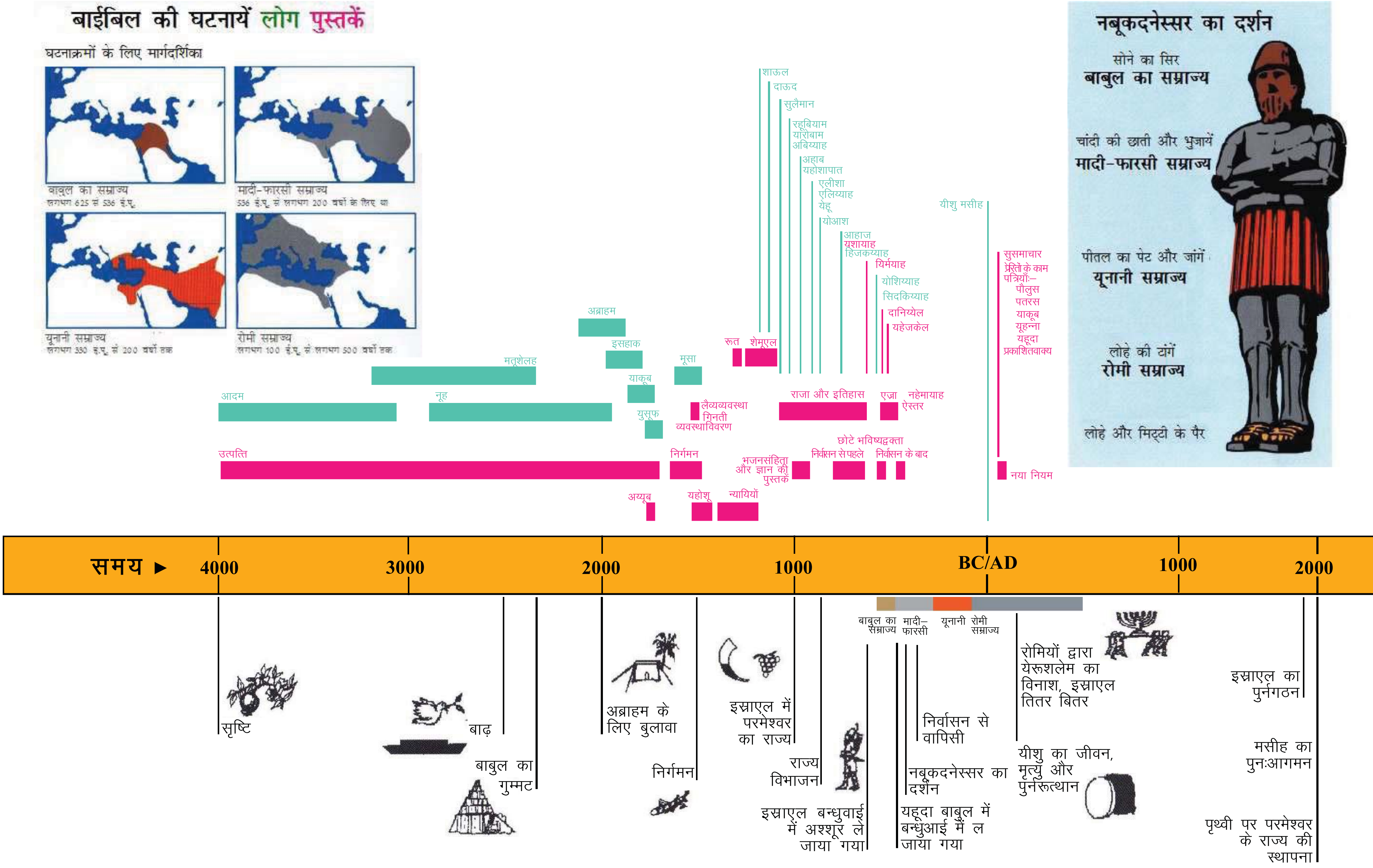
बाईबिल की घटनायें लोग पुस्तकें
घटनाक्रमों के लिए मार्गदर्शिका
बाबुल का सम्राज्य
लगभग 625 से 536 ई.पू.
मादी-फारसी सम्राज्य
536 ई.पू. से लगभग 200 वर्षों के लिए था
यूनानी सम्राज्य
लगभग 330 ई.पू. से 200 वर्षों तक
रोमी सम्राज्य
लगभग 100 ई.पू. से लगभग 500 वर्षों तक
नबूकदनेस्सर का दर्शन
सोने का सिर
बाबुल का सम्राज्य
चांदी की छाती और भुजायें
मादी-फारसी सम्राज्य
पीतल का पेट और जांघें
यूनानी सम्राज्य
लोहे की टांगें
रोमी सम्राज्य
लोहे और मिट्टी के पैर
शाऊल
दाऊद
सुलैमान
रहूबियाम
यारोबाम
अबिय्याह
अहाब
यहोशापात
एलीशा
एलिय्याह
येहू
योआश
आहाज
यशायाह
हिजकय्याह
यिर्मयाह
योशिय्याह
सिदकिय्याह
दानिय्येल
यहेजकेल
यीशु मसीह
सुसमाचार
प्रेरितों के काम
पत्रियाँ:–
पौलुस
पतरस
याकूब
यूहन्ना
यहूदा
प्रकाशितवाक्य
अब्राहम
इसहाक
मतूशेलह
याकूब
मूसा
रूत
शेमूएल
आदम
नूह
युसूफ
लैव्यव्यवस्था
गिनती
व्यवस्थाविवरण
राजा और इतिहास
एज्रा
नहेमायाह
ऐस्तर
छोटे भविष्यद्वक्ता
उत्पत्ति
निर्गमन
भजनसंहिता और ज्ञान की पुस्तकें
निर्वासन से पहले
निर्वासन के बाद
नया नियम
अय्यूब
यहोशू
न्यायियों
समय ▶
4000
3000
2000
1000
BC/AD
1000
2000
बाबुल का सम्राज्य
मादी-फारसी
यूनानी
रोमी सम्राज्य
सृष्टि
बाढ़
बाबुल का गुम्मट
अब्राहम के लिए बुलावा
निर्गमन
इस्राएल में परमेश्वर का राज्य
राज्य विभाजन
इस्राएल बन्धुवाई में अश्शूर ले जाया गया
यहूदा बाबुल में बन्धुआई में ल जाया गया
नबूकदनेस्सर का दर्शन
निर्वासन से वापिसी
रोमियों द्वारा येरूशलेम का विनाश, इस्राएल तितर बितर
यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनर्रुत्थान
इस्राएल का पुर्नगठन
मसीह का पुनःआगमन
पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की स्थापना